



GIRIDIH : भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा किपश्चिम बंगाल में हिंसा कहीं से सही नहीं है। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में सिर्फ एक समुदाय के अलावा अन्य समुदाय के लोग भी रहते हैं,जिन्हें सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेवारी पश्चिम बंगाल की सरकार को बगैर भेदभाव के करना चाहिए। केन्द्रीय मंत्री सोमवार को गिरिडीह में पत्रकारों से बात कर रही थी। केन्द्रीय मंत्री ने मुर्शिदाबाद के हालात पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल में हिंसा का वीभत्स रूप देखा जा रहा है जिसे कहीं से भी अच्छ नहीं बोला जा सकता है। उन्होंने कहा कि उपद्रवी लोगों के घरों में घुसकर हिंसा कर रहे हैं लोगों के घरों को जलाया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि लोगों की हत्या तक की जा रही है। और आलम यह है कि पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार लगातार हिंसा को बढ़ावा देने पर अमादा है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि केवल खास समूह को इस तरह का कृत्य करने के लिए सरकार पूरी तरह से जिम्मेदार है और मुझे लगता है कि यह सही नहीं है। केन्द्रीय मंत्री ने पश्चिम बंगाल सरकार की नियत पर सवाल उठाया और कहा कि पश्चिम बंगाल की ममता सरकार क्या किसी खास समूह के लिए ही बनी है और खास समूह के लिए ही काम कर रही है। उन्होंने कहा है कि सर्वोच्च सदन ने जिस बिल को पास कर दिया है और राष्ट्रपति ने उस बिल पर मुहर लगा दी है और अब वह कानून बन गया है, उस बिल के विरोध में इस तरह की हिंसा होना कानून व्यवस्था के लिए कतई सही नहीं है।

चैनपुर में 21 दिन बाद जलापूर्ति शुरू



PALAMU : जिला मुख्यालय मेदिनीनगर से सटे चैनपुर जलापूर्ति के शाहपुर इंटकवेल की मोटर में खराबी आ जाने के कारण लगभग 21 दिनों से जलापूर्ति बन्द थी। नगर आयुक्त ने कनीय अभियंता अवध साह और पाइपलाइन निरीक्षक छोटे लाल गुप्ता को युद्ध स्तर पर कार्य करते हुए जल्द जलापूर्ति बहाल करने का निर्देश दिया था। लगातार मरम्मत कार्य करते हुए सोमवार को एक वीटी मोटर से जलापूर्ति किसी तरह शुरू करायी गयी। बेलवाटिका पंपकूल जलापूर्ति से दूसरी वीटी मोटर लगाने का प्रयास किया जा रहा है। बताते चले कि मोटर जल जाने के बाद मोटर रिवाइंडिंग कर लगाया गया। इसी क्रम में पम्प के इम्पेलर में खराबी हो जाने के कारण रांची वर्कशॉप में भेजा गया था। बनकर आने के बाद भी तकनीकी गड़बड़ी के चलते पुनः रांची भेजना पड़ा था। 13 अप्रैल की देर रात मोटर रांची से बनकर आयी। नगर निगम कर्मियों के अथक प्रयास से मोटर को फीट कर चालू कर दिया गया है। फिलहाल एक मोटर चालू हो गयी है। नगर आयुक्त जावेद हुसैन ने गर्मी को देखते हुए दूसरा वीटी मोटर पम्पकूल बेलवाटिका जलापूर्ति से शाहपुर इंटकवेल में फिट कर जलापूर्ति जल्द सुदृढ करने का निर्देश दिया है।

वायु सेना में अग्निवीर अंतर्गत संगीतकार की निकली रिक्ति

HAZARIBAG : भारतीय वायु सेना में अग्निवीर योजना के अंतर्गत संगीतकार की रिक्ति निकली है। इसके लिए 21 अप्रैल से 11 मई तक ऑनलाइन पंजीकरण कर सकते हैं। भारतीय वायु सेना द्वारा अग्निवीर-वायु (संगीतकार) भर्ती रैली (नई दिल्ली और बेंगलुरु में) योग्य अविवाहित पुष्प और महिला उम्मीदवारों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किया गया है। इसमें अन्यर्थी का जन्म 1 जनवरी 2005 और 1 जुलाई 2008 (दोनों तिथियों सहित) के बीच हुआ हो। केवल पंजीकृत उम्मीदवार जिन्हें अस्थायी प्रवेश पत्र जारी किया गया है, उन्हें भर्ती रैली में उपस्थित होने की अनुमति दी जाएगी। तिथि, समय और स्थान अस्थायी प्रवेश पत्र में उल्लेखित होंगे।

डीआरएम ने ट्रेनों की लेटलतीफी दूर करने के लिए की मैराथन मीटिंग

PHOTON NEWS JSR : चक्रधपुर के डीआरएम तरुण हरिया ने रेलवे रेस्ट हाऊस में सोमवार को इंजीनियरिंग और ऑपरेंटिंग विभाग के अधिकारियों के साथ 3 घंटे तक मैराथन बैठक की। इस दौरान आदित्यपुर से सलगाजुड़ी के बीच बॉटलनेक के कारण ट्रेनों के लेट होने की समाधान पर मंथन किया। रेलवे के अधिकारियों से लूप लाइन तैयार करने, लोकल ट्रेनों के समय परिवर्तन समेत कई विकल्प बताए। इस दौरान डीआरएम ने रेलवे विकास निगम लिमिटेड के अधिकारियों से थर्ड लाइन निर्माण की प्रगति और समस्याओं के बारे में जानकारी ली। इस दौरान टाटानगर याई निर्माण की प्लानिंग पर भी चर्चा हुई। डीआरएम ने कहा कि एक्सप्रेस व पैसेंजर ट्रेनों और

सुजीत सिन्हा गैंग के शातिर अपराधी सहित दो गिरफ्तार

मेदिनीनगर के शहरी क्षेत्र से दबोचे गए दोनों, देसी कट्टा, रिवाल्वर व गोली भी बरामद

AGENCY PALAMU : अपराधियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान में पलामू पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने कुख्यात अपराधी सरगना सुजीत सिन्हा गैंग से जुड़े एक शातिर अपराधी सहित दो अपराधियों को गिरफ्तार किया है। दोनों की गिरफ्तारी मेदिनीनगर शहरी क्षेत्र से हुई। उनके पास से दो हथियार, गोली, मोबाइल फोन, फर्जी आधार कार्ड आदि बरामद किए गए।

सोमवार को दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी मेदिनीनगर मणिभूषण प्रसाद ने सोमवार को प्रेस वार्ता में बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर



पत्रकारों को मानले की जानकारी देते पुलिस पदाधिकारी व अपराधियों से बरामद किए गए सामान

कुख्यात अपराधी सरगना सुजीत सिन्हा गैंग से जुड़े हरि तिवारी उर्फ धीरेन्द्र कुमार तिवारी को गिरफ्तार किया गया है। हरि तिवारी पर 35 अपराधिक मामले दर्ज हैं। 2012 से हरि तिवारी आपराधिक

घटनाओं को अंजाम दे रहा था। जनवरी 2025 में मेदिनीनगर के बैरिया स्थित हाउसिंग कॉलोनी में केके मेमोरियल के बगल में अर्द्धनिर्मित मकान में अपराध की योजना बनाते छह अपराधी पकड़े

गए थे। सभी अपराधियों को हरि तिवारी ने एकजुट किया था और आपराधिक घटना को अंजाम देने वाला था। इस कांड में हरि तिवारी फरार चल रहा था। हरि तिवारी के पास से एक फर्जी आधार कार्ड,

जोरदार बारिश से सूखी बकुलिया नदी में आई जान

CHATRA : पत्थलगडा सहित कई प्रखंडों में सोमवार को दोपहर बाद जोरदार बारिश हुई। बेमौसम हुई बारिश से सूखी बकुलिया नदी में जान आ गई। साथ ही खेत खलिहान जल मग्न हो गए। दोपहर एक बजे के बाद डेढ़ घंटे तक आंधी और पत्थर के साथ झमाझम बारिश हुई। दो घंटे तक ग्रामीण जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया। नावाडीह के सिकीटांड में वज्रपात होने से मनरेगा बागवानी में आग लग गई। बारिश के कारण सूखी बकुलिया नदी में पानी उतर आया। पत्थलगडा में बैसाख माह में भादो सा नजारा दिखा। खेतों में लगे गरमा फसल को व्यापक नुकसान पहुंचा है। खेतों में काटकर रखे गेहूं सहित अन्य फसल बारिश से पूरी तरह भोंग गए। खेतों में बारिश का पानी जमा होने से सज्जियों की खेती को नुकसान पहुंचा है। बेमौसम बारिश से आम और महुआ के उत्पादन पर असर पड़ने की संभावना बढ़ गई है।

श्रमजीवी पत्रकार संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 30 को

KODERMA : भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ बीएसपीएस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक महत्वपूर्ण बैठक कोडरमा जिला के प्रसिद्ध शहर झुमरी तिलैया के नजदीक उरवां में 30 अप्रैल को होगी। बैठक में देश भर के पत्रकार जुटेंगे। झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन की कोडरमा जिला इकाई बैठक के आयोजन को लेकर तैयारी में जुटी हुई है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक और कार्यक्रम स्थल राष्ट्रीय उच्च मार्ग 20 (पुराना नंबर 31) उरवां मोड़ स्थित बाबा होटल एंड बैव्वेट तय किया गया है। 14 अप्रैल को जेजेए की टीम बाबा होटल एन्ड बैव्वेट का जायजा लेने पहुंची। टीम में बीएसपीएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के दो सदस्य जगदीश सलुजा, संजीव समीर, झारखंड प्रदेश सचिव जावेद इस्लाम, कोडरमा जिला अध्यक्ष अलोक सिन्हा, जिला सचिव अनिल पांडेय, विजय मोदी, जयकांत कुमार, मंदू सोनी, मनीष वर्णवाल और बरही के जयदीप सिन्हा शामिल थे। टीम ने होटल के संचालक गौरीशंकर के साथ होटल का बैव्वेट हॉल, ठहरने के कमरे का जायजा लिया।



टाटानगर में अधिकारियों के साथ मंत्रण करते डीआरएम तरुण हरिया

लोको शेड व सिक लाइन का किया निरीक्षण
डीआरएम ने रेस्ट हाऊस में मीटिंग के बाद इलेक्ट्रिक लोको शेड, ट्रेनिंग सेंटर और ट्रेनिंग सेंटर के बगल में बने वार्डरों का निरीक्षण किया। इस दौरान इंजीनियरिंग विभाग के कर्मचारियों ने डीआरएम को बताया कि लाइन निर्माण के दौरान यह सभी विकास कार्यों के जद में आएंगे। इनको हटाना पड़ेगा। डीआरएम ने इन सभी स्थानों को चारों तरफ से देखा। मालूम हो कि टाटानगर स्टेशन का री-डेवलेपमेंट होना है। इसके लिए 360 करोड़ का टेंडर हुआ है। इसके पहले फाइनल प्लानिंग को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। निर्माण कार्य शुरू होने से पहले आने वाली बाधाएं और समाधान के लिए डीआरएम स्थलों का निरीक्षण कर रहे हैं।

मालगाड़ी का समय से परिचालन प्राथमिकता है, इस पर फोकस रखना है। इस दौरान एडीआरएम

विनय कुजूर व आरपीएफ कमांडेंट एस. कुट्टी समेत कई वरीय अधिकारी मौजूद थे।

PHOTON NEWS JSR : ब्रह्मर्षि विकास मंच, जमशेदपुर द्वारा 10 बटुकों (बालकों) का सामूहिक उपनयन संस्कार कराया। सिदगोड़ा स्थित अमल संघ मैदान में हुलासगंज के आचार्य रीश शर्मा व उनके साथ आए 5 आचार्यों ने वैदिक रीति-रिवाज के साथ अनुष्ठान संपन्न कराया। सोमवार को स्वस्तिवाचन, मंडप पूजन, धृतधारी, देवपूजन, चौलकर्म मुंडन, उपनयन संस्कार, वेदारंभ, अभिषेक, आशीर्वाद आदि हुए। पूरे संस्कार के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक गीतों से पूरे क्षेत्र का माहौल पारिवारिक बना दिया। मुंडन के उपरांत सभी बटुक गेरुआ वस्त्र धारण कर अपने कंधे पर भिक्षाटन के पात्र लिए अपने रिश्तेदारों एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों के समक्ष भिक्षाम



सिदगोड़ा में उपनयन संस्कार के बाद मंत्रोच्चार करते बटुक

देहि... का उच्चारण किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में बिहार के प्रसिद्ध समाजसेवी रामाधार सिंह, श्री ब्रह्मर्षि विकास मंच सरायकेला-खरसावां के अध्यक्ष रामेश्वर शर्मा, ब्रह्मर्षि विकास मंच, जमशेदपुर के अध्यक्ष रामप्रकाश पांडेय, महासचिव योगेंद्र मौआर, समाजसेवी सुधीर कुमार सिंह आदि उपस्थित थे। मंच संचालन विनोद

शुक्ला ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सुधीर कुमार, विजय नारायण, कृष्णकांत, गोपाल सिंह, मुकेश, चंदन कुमार, बिरेन्द्र, संजय राय, कामेश्वर तिवारी, झूलन ठाकुर, डॉ. अनिल सिंह, रवींद्र, अशोक, कुंदन, राजेश शर्मा, मनोज ठाकुर, श्रीराम ठाकुर, कृष्णनंदन सिंह, संजय सिंह, मुकेश शर्मा, अमरेंद्र आदि की अहम भूमिका रही।

सुबह से शाम तक जय भीम... जय संविधान के नारों से गूंजता रहा पूरा राज्य

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती पर हुए कई कार्यक्रम

डॉ. अंबेडकर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता : डीसी



कोर्ट मोड़ के पास कार्यक्रम में उपस्थित डीसी-एसपी व अन्य

LOHARDAGA : लोहरदगा जिला मुख्यालय सहित जिले के प्रखंड क्षेत्रों में सोमवार को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 134 वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर बाबा साहब को श्रद्धांजलि दी गई। लोहरदगा कोर्ट मोड़ स्थित बाबा साहब की प्रतिमा पर उपायुक्त डा.वाघमोरे प्रसाद कृष्ण, एसपी हारिश बिन जमा, अनुमंडल पदाधिकारी अमीत कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों और समाजसेवियों ने माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर उनके पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया।मीके पर कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया. इसका उद्घाटन डीसी, एसपी सहित अन्य अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

संविधान व वर्तमान परिस्थिति पर हुई चर्चा



JAMSHEDPUR : अंबेडकर जयंती पर सोमवार को पुराना कोर्ट परिसर स्थित पेशानर समाज भवन में परिचर्चा हुई। इसमें वक्ताओं ने संविधान व वर्तमान परिस्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता झारखंड मानवाधिकार संघ के संरक्षक अविनाश सिंह राजा थे, जबकि जमशेदपुर आरटीआई कार्यकर्ता संघ की ओर से केन्द्रीय अध्यक्ष सह वरीय अधिवक्ता दिलबहादुर व महासचिव कृतिवास मंडल ने आरटीआई और मानवाधिकार के मामले में हो रहे कानून के उल्लंघन और हनन को केंद्रित करते हुए अपनी बातों को रखा। उन्होंने कहा कि देश के लोगों को संवैधानिक अधिकार तो दे दिया गया है, लेकिन लोग अपने ही हक अधिकार के लिए न केवल दर-दर भटकते हैं।

बाबा साहब की प्रतिमा पर डीसी ने किया माल्यार्पण

HAZARIBAG : बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर उपायुक्त नैन्सी सहाय ने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड चौक स्थित बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस मौके पर उपायुक्त ने संविधान के रचयिता बाबा साहब के मूल्यों और उनके आदर्शों को याद किया। उन्होंने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज, शिक्षा, राजनीति और न्याय व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे एक महान विचारक, समाज सुधारक, और संविधान निर्माता थे। हमें उनके आदर्शों को आत्मसात करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक,



प्रतिमा पर माल्यार्पण करती डीसी नैन्सी सहाय

नगर आयुक्त, एनडीसी, जिला स्तरीय अधिकारी, संस्थानों के सदस्य सहित आम जन मौजूद थे।

जिला प्रशासन ने किया अंबेडकर को नमन



LATEHAR : संविधान निमार्ता एवं महान समाज सुधारक भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर जिला प्रशासन की ओर से श्रद्धांजलि दी गई। चंदनडीह पार्क स्थित प्रतिमा पर आईटीडीए निदेशक प्रवीण कुमार गागराई, डीआरडीए निदेशक प्रभात रंजन चौधरी, सिविल सर्जन डॉ. अवधेश कुमार सिंह, जिला परिवहन पदाधिकारी सुरेंद्र कुमार, जिला शिक्षा अधीक्षक गौतम कुमार साहू सहित जिले के अन्य पदाधिकारियों ने मूर्ति पर माल्यार्पण किया।

सामाजिक न्याय व समानता के प्रतीक हैं डॉ. अंबेडकर : कोचे मुंडा



बाबा साहब अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित लोग

KHUNTI : भाजपा तोरपा मंडल की ओर से मरला गांव में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती पर उनके चित्र पर नारायण और पुष्प अर्पित कर कार्यकर्ताओं ने उन्हें नमन किया। मौके पर पूर्व विधायक कोचे मुंडा ने कहा कि डॉ अम्बेडकर का जीवन सामाजिक न्याय, समानता एवं लोकतंत्र के मूल्यों का प्रतीक है, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने जीवन भर सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया और स्वतंत्रता और सामाजिक समरसता के लिए संघर्ष किया। मौके पर जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता, रामानंद साहू, संजय नाग, राजू साहू, सुबोध कुमार, शिवनाथ शाहदेव, छोटत भंगरा, बोलो भंगरा आदि उपस्थित थे।

पुलिस ने आरोपी के घर पर लगाई नोटिस



CHATRA : पत्थलगडा थाना के फरार आरोपी श्रवण कुमार रजक के बरवाडीह स्थित घर में ढोल बजाकर पुलिस ने इशतेहार चिपकाया। पुलिस ने उपस्थित श्रवण कुमार रजक के पिता बालचंद रजक को बताया कि श्रवण कुमार रजक जल्द से जल्द थाना या न्यायालय में आत्मसमर्पण करें नहीं तो न्यायालय के अगले आदेश पर कुर्फी जबाी किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि श्रवण कुमार रजक की पत्नी देहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज करारया है। इसके बाद श्रवण कुमार रजक फरार है। अगर निरीक्षक अरविंद रविदास और प्रह्लाद पासवान ने बताया कि फरार आरोपित की गिरफ्तारी सुनिश्चित करने के लिए पुलिस ने अब सख्त रूप अपनाते हुए उनके घरों पर इतिहास चिपकाने की कार्रवाई की है। पुलिस ढोल बजाकर पूरे इलाके में यह संदेश दिया कि फरार आरोपित जल्द से जल्द सरेंडर करे अन्यथा उनके खिलाफ बड़ी कार्रवाई की जाएगी। मामले में कांड संख्या 2/2024 दर्ज है।



आज आप जितना कर सकती हैं, उससे अधिक करने की कोशिश न करें। अपनी गतिविधियों की छंटनी शुरू कर दीजिए और फिर अपनी कार्य-सूची पर पुनर्विचार कीजिए। जो चीजें बेकार एवं महत्वहीन हैं, उन्हें बाहर कर दीजिए। आप जो भी कर सकती हैं या करना चाहती हैं, उन तमाम चीजों को एक ही दिन में करने का प्रयास न करें। सबसे जरूरी चीज पर नजर रखें एवं प्राथमिकता के आधार पर उन्हें करें। व्यवितगत रिश्ते बनाएं, ताकि काम एवं जीवन में सहजता आए।

एक समय में एक ही काम
अपना समय केवल उन्हीं चीजों पर खर्च करें, जो आपके लिए महत्वपूर्ण हो। दो या उससे अधिक काम एक साथ करने से तोबा करें, तब भी जब चीजें आसान लगती हों या लगता हो कि आप कर लेंगी। जब आप एक से अधिक काम एक ही बार में करती हैं तो आपका ध्यान बंट जाता है। आप एकाग्रता खो देती हैं, जो कि बेहतर प्रदर्शन के लिए जरूरी है।

कुछ उदाहरण
यदि आप एक साथ खाती एवं पढ़ती हैं तो आपका कुछ ध्यान पढ़ने पर और कुछ खाने पर होता है। आप कोई भी चीज ढंग से नहीं कर पाती हैं। जब आप टहलती हैं तो टहलें, जब आप बैठती हैं तो बैठें। भटके नहीं। जब झाड़व करें तो पूरा ध्यान रोप पर रखें। काफी ऊंची आवाज में संगीत सुनना या चालक एवं यात्री के बीच की बातचीत कई सड़क हादसों का कारण होती है। यदि आप यात्री हैं तो चालक को गाड़ी चलाने दें न कि उससे बातचीत करें।

पांच गुण होना महत्वपूर्ण
किसी भी स्त्री या पुरुष में पांच गुण होना चाहिए। वे हैं- शिष्टाचार, उदारता, लगन, संकल्प एवं दया भाव। शिष्टाचार से आप बेइज्जती को अनदेखा कर सकती हैं, उदारता से सबको जीत



इन मेकअप प्रोडक्ट्स से रहें दूर

टेलकम पाउडर
टेलकम पाउडर सामान्य तौर पर आपमें से कई लोगों के जीवन का एक अहम हिस्सा होगा। भले ही आप इसे सुरक्षित मानते हों, लेकिन इसमें मौजूद सिलिकेट्स नामक तत्व आपको एलर्जी, फेफड़ों में इन्फेक्शन या फिर केसर जैसी गंभीर बीमारी का शिकार बना सकता है।

ब्लीच क्रीम
अधिकांश ब्लीच क्रीम में पाया जाने वाला हाइड्रोक्विनोन त्वचा के निकलने, लालिमा या लाल रेशेस अथवा त्वचा के रूखपन के लिए जिम्मेदार होता है। इसकी जगह त्वचा प्रभावशाली घरेलू उत्पादों का प्रयोग करना

प्राथमिकता के आधार पर तैयार करें अपनी कार्य-सूची

सकती हैं। लगन से लोग आप पर विश्वास करेंगे और संकल्प एवं दया भाव से सफलता प्राप्त कर सकती हैं। अच्छी संगत, अच्छी किताबें एवं प्रार्थना- ये तीन चीजें किसी मनुष्य को तीनों लोकों का सम्राट बनाती हैं।

सफलता नैसर्गिक नहीं होती
सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया नैसर्गिक नहीं है। सफलता हम विरासत में नहीं मिलती। इसे हम अपने प्रयासों से पैदा करते हैं। यह हमारे कठिन परिश्रम एवं क्रियाओं की पुनरावृत्ति का काल होता है। संघर्ष जीवन है और जीवन की क्रियाएं ही इसे कर सकती हैं। हमें केवल सपने देखने वाला नहीं बल्कि आगे बढ़कर उसे करने वाला बनना चाहिए।

सेमिनारों में कुछ नहीं
हम समय-समय पर प्रेरित करने वाले लोगों से मिलते रहते हैं या सेमिनारों में ऐसे भाषण सुनते रहते हैं। इस प्रकार के पारस्परिक क्रिया से हमें अपने तरीकों को सुधारने एवं काम करने की शैली की और बेहतर करने के उपाय मिलते हैं। हम उनको अपनाते हैं और महसूस करते हैं कि अपने आप को और बेहतर करें एवं जीवन में बदलाव लाने का रहस्य पा लिया है। यह पूरी गहमागहमी दो-चार दिनों में खत्म हो जाती है और हम फिर वही होते हैं जहां हम थे।

ऊर्जा, समय व पैसे बचायें
याद रखिये सेमिनार एवं कार्यशाला में भाग लेना समय, ऊर्जा और पैसे की बर्बादी है, यदि हम उन चीजों को नहीं अपनाते, जो वे हम तक पहुंचाना चाहते हैं। यदि आपको कोई बेहतरीन आइडिया मिलता है तो आप अपने आप से पूछिए कि आप इससे क्या करने जा रहे हैं और आप इसे कैसे करेंगे। सभी बातों को लिखिए और फिर निर्णय लीजिए कि आप क्या करने जा रहे हैं। किन उपायों को लागू करना है, उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए और सब कुछ करने के लिए समय सीमा तय करनी चाहिए।



अक्सर महिलाओं की ये समस्या होती है कि घर का खर्च ज्यादा हो रहा है और पैसों से जुड़ी बचत नहीं हो पा रही है। यहां निवेश और बचत की नहीं खर्च की बात हो रही है। घरों में आजकल की व्यस्त लाइफस्टाइल कुछ ऐसी हो गई है कि लोगों को ये समझ ही नहीं आता कि उनका इतना खर्च आखिर कैसे बढ़ गया है। ये सब कुछ पैसे से जुड़ी कुछ गलतियों के कारण होता है।

पैसे के बारे में बात नहीं करना
आम तौर पर यही देखा जाता है कि पति और पत्नी एक दूसरे से इसके बारे में बात नहीं करते। पत्नी घर संभाल रही हो या फिर बाहर काम कर रही हो तो भी इसके बारे में बातें नहीं की जातीं। बच्चे अगर पढ़ने की उम्र में हैं या टीनएज हो गए हैं तो उन्हें भी अक्सर घर पर ये नहीं बताया जाता है कि निवेश और बचत की जरूरत क्या है। हफ्ते में कम से कम एक बार सभी को बैठकर घर और पैसे के खर्च से जुड़ी बातें करनी चाहिए। इससे वो खर्च भी सामने आ जाता है जिसका शायद अंदाजा भी नहीं होता। ये घर का बजट बनाने में भी मददगार साबित हो सकता है।

पहले खर्च फिर जो बचा वो निवेश
हमारी भारतीय संस्कृति में एक आम कहावत है कि, 'जितनी चादर है उतना ही पैर पसारा'। ये बहुत अच्छा कथन है, लेकिन इसे हमें थोड़ा सा बदलना होगा क्योंकि हम हमेशा जितना खर्च है उतना कर लो और उसके बाद जो बचा वो बचत। इससे समस्या ये होती है कि जरूरत से अधिक खर्च भी हो जाता है और बचत कम रह जाती है। इसे थोड़ा सा बदलने की जरूरत है और कमाई के बाद एक निश्चित बचत और उसके बाद जितना बचा उसे खर्च करना चाहिए। ये बजट आसानी से बन सकता है कि महीने में कितनी बचत की जा सकती है।

बचत और निवेश का अंतर न समझना
मान लीजिए आप हर महीने की आय में से कुछ पैसे बचा लेते हैं, लेकिन क्या इन पैसे को बचाने से सिर्फ काम हो जाता है? जो नहीं, बचत और निवेश में काफी अंतर है जिसे समझने की जरूरत है। पैसे इंग्लैंड में पड़े रहें या फिर वो बैंक के सेविंग्स अकाउंट में रखा है तो उससे हमारे भविष्य के लिए कोई फायदा हो रहा है? बिल्कुल नहीं। तन्वी जी का कहना है कि उनके पास बहुत से लोग आते हैं और वो यही मात खा जाते हैं। उन्हें निवेश इस बारे में सोचकर करना चाहिए कि भविष्य में ये कितना रिटर्न देगा।



क्या आपके वार्डरोब में है जींस के ये ट्रेंडी कलेक्शन

जींस एक ऐसी कॉमन ड्रेस है, जो हर लड़की के वार्डरोब में जरूर मौजूद होती है। बाजार में कई स्टाइलिश जींस आ चुकी हैं, जिन्हें आप अपनी पसंद और फिटिंग के मुताबिक खरीद सकती हैं। जींस खरीदने से पहले आपको यह जानना जरूरी है कि आजकल किस पैटर्न की जींस का चलन ज्यादा है। आज हम आपको जींस की इन्हीं वैरायटी के बारे में बता रहे हैं जिनके बारे में जानकर आपको अपनी पसंद की जींस खरीदने में आसानी होगी।

रिप्ट जींस
रिप्ट जींस एक दशक से फैशन ट्रेंड में बनी हुई हैं। कॉमन यंग गर्ल्स से लेकर बॉलीवुड एक्ट्रेस सभी में इसका क्रेज है। शायद ही कोई लड़की होगी जिसके वार्डरोब में रिप्ट जींस न हों। एक दशक पहले ट्रेंड में आई ये जींस आज भी लड़कियों की पहली पसंद बनी हुई है। इसमें जींस के कई हिस्से में कुछ स्लिट्स या कट्स बने होते हैं। कॉमन लैंग्वेज में इसे फटी जींस भी कहते हैं। अगर आपके पास कोई पुरानी जींस है, जिसे आप नहीं पहनती तो उसे ब्लेड से कट करके रिप्ट जींस का लुक दें सकती हैं। रिप्ट जींस को आप लॉन्ग कुर्ती या फिर किसी भी टॉप के साथ वियर कर सकती हैं। ये आपको कूल और स्टाइलिश लुक देगी।

बैगी जींस
बैगी जींस अपने लूज साइज की वजह से काफी कफर्टेबल होती हैं। दो से तीन दशक पहले इस पैटर्न की जींस का काफी चलन था। एक बार फिर से इसका ट्रेंड लौट आया है। यही वजह है कि सेलेब्स में भी ये जींस काफी पॉपुलर हैं। ट्रैवेलिंग के दौरान या कहीं आने-जाने के लिए एक्ट्रेस इसे कैरी किए नजर आती रही हैं।

पैच वर्क जींस
इन दिनों पैच वर्क जींस भी काफी पॉपुलर हैं। यंग गर्ल्स से लेकर सेलेब्स इसे पहने नजर आती रहती हैं। ये जींस अलग-अलग रंग के जींस के चौकर दूकड़ों को एक साथ पैच करके बनाई जाती हैं, जो देखने में काफी युनीक और कूल लगती हैं।

बेल बॉटम जींस
पुराने जमाने में आपने हीरो-हीरोइन को फिल्मों में नीचे से खुली पैट या जींस पहने देखा होगा। इस स्टाइल को बेल बॉटम स्टाइल कहते हैं। आजकल बेल बॉटम जींस का फैशन फिर से लौट आया है। ये जींस काफी कफर्टेबल होती हैं। यंग गर्ल्स से लेकर वॉकिंग वुमन बेल बॉटम जींस पहनना पसंद कर रही हैं।

स्किन फिट जींस
इसके नाम से ही क्लियर है कि ये जींस कैसी होगा। ये पूरी तरह स्किन टाइट होती हैं। ज्यादातर लड़कियां स्किन फिट जींस पहनना पसंद करती हैं, लेकिन अगर कफर्ट की बात करें तो ये उतनी आरामदायक नहीं होती। तब भी इस जींस का क्रेज लड़कियों में बना हुआ है। इसे आप अपनी मनपसंद कुर्ती या फिर टॉप के साथ कैरी कर सकती हैं।



बार-बार बिगड़ जाता है घर का बजट तो ना करें पैसों से जुड़ी ये गलतियां

पोस्ट ऑफिस की NSC अच्छी लगती है, लेकिन इसका सीधा सा मतलब ये होता है कि पैसे के साथ कोई एक्सपेरिमेंट नहीं किया जाता। कारण ये है कि अगर एक ही तरह से पैसा निवेश होगा तो खतरे की स्थिति में एक ही साथ उसके खर्च होने या फिर डूब जाने की गुंजाइश भी होती है।

फाइनेंशियल भाषा से डरना और रिस्क न लेना
इंसान का दिमाग जो चीज समझ नहीं पाता वो उससे हमेशा डरता रहता है और ये बहुत आम घटना है कि लोग खुद को फाइनेंशियल भाषा सिखा नहीं पाते। ऐसे में उन्हें जानकारी न के बराबर रहती है। होता ये है कि ऐसी स्थिति में निवेश के समय हम बहुत ज्यादा

सोच विचार में लग जाते हैं और कई बार डर के कारण रिस्क नहीं ले पाते। इससे बाद में नुकसान होने की गुंजाइश है।

कर्ज को न समझना
बहुत से लोगों के पास होम लोन होता है, कार का लोन होता है, क्रेडिट कार्ड से खर्च होता है। अर्थव्यवस्था में कर्ज की दरें लगातार बढ़ती और घटती रहती हैं। ऐसे में हमारे कर्ज पर भी असर पड़ता है। किसी भी तरह के लोन को हमेशा फाइनेंशियल एक्सपर्ट से हर साल रिव्यू करवाना चाहिए। क्या पता ब्याज की दर इससे कम हो सके। इसी तरह से क्रेडिट कार्ड सबसे महंगा तरीका है ऐसे में कई बार वो बहुत महंगा पड़ जाता है। कोशिश करें कि हर वक्त क्रेडिट कार्ड निकालने से बचें।



कलर आईलाइनर लगाने से पहले जरूरी टिप्स मिलेगा स्टाइलिश लुक

चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए लड़कियां मेकअप करना पसंद करती हैं। वहीं आंखों को बड़ा, आकर्षित दिखाने के लिए आईलाइनर लगाती हैं। बात अगर आईलाइनर की करे तो आमतौर पर लड़कियां इसमें ब्लैक कलर पसंद करती हैं। मगर आजकल लड़कियों में कलरफुल आईलाइनर का क्रेज भी बढ़ रहा है। इससे लुक और भी स्टाइलिश नजर आता है। मगर इसे लगाने से पहले कुछ बातों का ध्यान देने की जरूरत होती है। कलर आईलाइनर लगाने के लिए फॉलो करें ये टिप्स

मेकअप ना करें
कलर आईलाइनर अक्सर आंखों को हाइलाइट करने के लिए लगाया जाता है। इसलिए इसे लगाने के बाद अपना रेगुलर मेकअप ना करें। नहीं तो इससे आपका मेकअप अधिक लगेगा।

सही कलर चुनें
अगर आप पहली बार आईलाइनर लगाने वाली है तो इसके लिए डार्क कलर यूज करें। असल में, इससे आपका लुक एकदम बदल जाएगा। ऐसे में आप पहली बार के लिए ब्राउन या ब्लू कलर चुन सकती हैं। मस्कारा ब्लैक कलर का लगाएं आप भले ही आईलाइनर कलर्ड चुन रही हैं मगर इसके साथ मस्कारा ब्लैक ही लगाएं। इससे आपकी आंखों को ग्रेसफुल लुक मिलेगा। इसके साथ ही फेक आईलैशज लगाने की गलती ना करें।



बेहाल वृद्धों के लिये आयोग बनना एक सराहनीय कदम



रहे हैं। राज्य के करीब 21 लाख घरों में युवाओं के पलायन करने के कारण सिर्फ बुजुर्ग बचे हैं। गांव के गांव पलायन का दंश झेलते हुए वीरान हो चुके हैं। लाखों घरों में सिर्फ ताले लटके नजर आते हैं। खाड़ी के देशों में जाकर सुनहरा भविष्य तलाशने की होड़ में इसी प्रांत के सर्वाधिक युवा है, भले ही इस प्रांत ने सर्वाधिक शिक्षा से प्रगतिशील सोच दी है, लेकिन अंतहीन भौतिक लिप्साओं को भी जगाया है, जिससे ही बुजुर्गों की उपेक्षा या उनको उनके हाल पर छोड़ देने की विकृत मानसिकता एवं त्रासदी उभरी है। वृद्धों की उपेक्षा देशभर में देखने को मिल रही है, हाल के वर्षों में केरल के बाद पंजाब-हरियाणा में भी नजर आ रही है। वैसे तो यह हमारे नीति-निर्याताओं की नाकामी का भी परिणाम है कि हम युवाओं को उनकी योग्यता-आकांक्षाओं के अनुरूप रोजगार देश में नहीं दे पाए। उन्हें न अपनी जन्मभूमि का सम्मोहन रोकता है और न ही यह फिफ्र कि उनके जाने के बाद बुजुर्ग माता-पिता का क्या होगा? एकाकीपन का त्रास झेलते केरल के इन गांवों में बुजुर्गों के पास पैसा तो है मगर समाधान नहीं है। कुछ वृद्धों के पास तो धन का अभाव भी इस समस्या को विकराल रूप दे रहा है। राज्य में वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ने के साथ ही बुजुर्गों के अधिकारों पर लगातार हमले हो रहे हैं।

भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार, उपेक्षा एवं उदासीनता एक बढ़ती चिंता का विषय है, उनका एकाकीपन एवं अकेलापन उससे बड़ी समस्या है। केरल के वृद्ध-संकट को

महसुस करते हुए वहां की सरकार ने वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाया है, जो एक सुझबुझभरा कदम है। लेकिन यह वक्त बताएगा कि भ्रष्ट अफसरशाही व घुन लगी व्यवस्था में ये आयोग कितना कारगर होगा? लेकिन फिर भी जिस राज्य में हर पांचवें घर से एक व्यक्ति विदेश चला गया है, वहां ऐसा आयोग एक सीमा तक तो समस्या के समाधान की दिशा में रोशनी बनेगा। जरूरत है सरकारी अधिकारी संवेदनशीलता एवं ईंसानियत से बुजुर्गों की समस्याओं का समाधान करने के लिये आगे आये। केरल की सामाजिक न्याय मंत्री आर. बिंदु के अनुसार आयोग समृद्ध और निम्न आय वाले दोनों ही परिवारों के वृद्ध व्यक्तियों के शोषण की समस्या का महत्वपूर्ण समाधान करेगा। जो वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल, उनकी गरिमा, कल्याण और जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ लोगों को अक्सर स्वास्थ्य में गिरावट, अकेलेपन और वित्तीय असुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आवश्यक सहायता प्रदान करने से अधिक समावेशी और दयालु समाज बनाने में मदद मिलती है। निस्संदेह, बुजुर्गों की आवश्यकताएं सीमित होती हैं। लेकिन उनका मनोबल बढ़ाने की जरूरत है। सबसे ज्यादा जरूरी उनकी स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं दूर करना है। बेहतर चिकित्सा सेवा व घर-घर उपचार की सहज उपलब्धता समस्या का समाधान दे सकती है। वैसे अकेले रह रहे बुजुर्गों को भी इस दिशा में पहल करनी होगी। सामाजिक

सक्रियता एवं मनोबल इसमें सहायक बनेगा। नीति-निर्याताओं को सोचना होगा कि अगले दशकों में देश युवा भारत से बुजुर्गों का भारत बनने वाला है। वर्ष 2050 तक भारत में साठ साल से अधिक उम्र के 34.7 करोड़ बुजुर्ग होंगे। क्या इस चुनौती से निपटने को हम तैयार हैं? क्या केरल की तरह अन्य राज्यों की सरकारें एवं केन्द्र सरकार लगातार बुजुर्गों से जुड़ी समस्याओं के लिये ठोस कदम उठायेगी? वसुधैव कुटुम्बकम् की बात करने वाला देश एवं उसकी नवपीढ़ी आज एक व्यक्ति, एक परिवार यानी एकल परिवार की तरफ बढ़ रहे हैं, वे अपने निकटतम परिजनों एवं माता-पिता को भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं, उनके साथ नहीं रह पा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी गतिदिर्नं हाईकोर्ट के अनेक फैसलों को पलटते हुए सराहनीय पहल की है। जिनमें अब बुजुर्ग माता-पिता से प्रॉपर्टी अपने नाम कराने या फिर उनसे गिफ्ट हासिल करने के बाद उन्हें यूं ही छोड़ देने, वृद्धाश्रम के हवाले कर देने, उनके जीवनयापन में सहयोगी न बनने की बढ़ती सोच पर विराम लगेगा, क्योंकि यह आधुनिक समाज का एक विकृत चेहरा है। संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने वृद्धों के जीवन को नरक बनाया है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ विलकुल नहीं रहना चाहते। ऐसे बच्चों के लिए सावधान होने का वक्त आ गया है, सुप्रीम कोर्ट ने इसको लेकर एक ऐतिहासिक फैसला में कहा है कि अगर बच्चे माता-पिता की देखभाल नहीं करते हैं, तो माता-पिता की ओर से बच्चों के नाम पर की गई संपत्ति की गिफ्ट डीड को रद्द किया जा सकता है। यह फैसला माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम के तहत दिया गया है, जिससे वृद्धों की उपेक्षा एवं दुर्व्यवहार के इस गलत प्रवाह को रोकने में सहयोग मिलेगा। नये विश्व की उन्नत एवं आदर्श संरचना बिना वृद्धों की सम्मानजनक स्थिति के संभव नहीं है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिफ्र में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-शाम खप जाती है, वहीं वृद्ध महिला एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि इस तरह परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। ऐसे शर्म को धोने के लिये ही केरल सरकार का वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोग बनाना एवं सुप्रीम कोर्ट का संवेदनशील होना एक उजाला बना है, जिससे जीवन की संध्या को कष्टपूर्ण होने से निजात मिलने की उम्मीदें जगी है।

संपादकीय

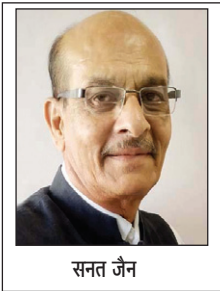
जिम्मेदारी से नहीं बच सकते

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ विरोधप्रदर्शन हिंसक हो जाने से पिता-पुत्र समेत तीन लोगों की मौत हो गई। हिंसक झड़पों के बाद छापेमारी में 150 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया। मालदा, दक्षिण 24 परगना और हुगली जिलों में पुलिस वैन समेत कई वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया। सुरक्षा बलों पर पत्थर फेंके गए। सड़क जाम कर दी गई और रेलवे संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया। कई जगहों पर ट्रेन सेवाएं घंटों बाधित रही। स्थिति इतनी भयावह हो गई कि कलकत्ता हाईकोर्ट को सीआरपीएफ की तैनाती के आदेश देने पड़े। अदालत ने कहा कि वह इस तरह की स्थिति से आंखें नहीं मूंद सकती। राज्य सरकार और केंद्र, दोनों को स्थिति को विस्तृत रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया। मामले की अगली सुनवाई 17 अप्रैल को होगी। आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है। केंद्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल के भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने आरोप लगाया कि ममता शासन शमशेरगंज, सुती और जंगीपुर में 'हिन्दुओं पर हमले' के बावजूद आंखें मूंद बैठता है। हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम राज्य में लागू नहीं किया जाएगा। बेशक, ममता बनर्जी ने हिंसा को किसी सूरत बर्दाश्त नहीं करने की बात कही है, लेकिन उनका यह कहना गैर-जिम्मेदाराना है कि नया कानून राज्य में लागू नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री इस तथ्य से वाकिफ हैं कि संसद द्वारा बनाया गया कानून हर राज्य में लागू होता है। ममता भ्रम फैलाने का काम कर रही हैं। वे यह कह कर पल्ला नहीं झाड़ सकती कि हमने यह कानून नहीं बनाया है जिस पर लोग भड़के हुए हैं। यह कानून केंद्र ने बनाया है, इसलिए जो भी जवाब चाहिए केंद्र से मांगे जाने चाहिए। लेकिन केंद्र के पाले में गेद डाल कर बचा नहीं जा सकता। राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखना ममता सरकार की जिम्मेदारी है। और हिंसक प्रश्रनकारियों से इस अंदाज में बात नहीं की जानी चाहिए कि वे राज्य सरकार से क्यों नाराज हैं। उनकी नाराजगी तो केंद्र सरकार से होनी चाहिए जिसने यह कानून बनाया है। मुख्यमंत्री का जो रोख है कि उससे लगता है कि कानून-व्यवस्था दुरोस्त रखने से ज्यादा उनकी रुचि राजनीति करने में है। मामला अदालत के समक्ष है, तो उसका फैसला आने तक विरोध प्रदर्शन अनुचित है। पश्चिम बंगाल सीमांत राज्य है, जिसकी सीमा उत्तर-पुथल के शिकार पड़ोसी बांग्लादेश से लगती है। सुरक्षा व्यवस्था में शिथिलता भारी पड़ सकती है।

चिंतन-मनन

वीरत्व की अलंकृति है क्षमा

क्षमा वीरत्व की अलंकृति है। दुर्बल और विवश व्यक्ति द्वारा उद्गीत क्षमा का माहात्म्य उतना प्रखर नहीं हो सकता। ज्ञान की स्फुरणा में मौन की सार्थकता है। शक्ति-संपन्नता में क्षमा की सार्थकता है और त्याग-भावना में आत्मगोपन या अप्रशस्ति की सार्थकता है। शक्ति के अभाव में स्वीकृत का कवच व्यक्ति को कई अवांछनीय परिस्थितियों से त्राण तो दे सकता है, पर उससे क्षमा का वर्चस्व धुंधला हो जाता है। मन के प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न होने पर संभावित प्रोध को शांति से प्रतिहत करने वाला व्यक्ति अपनी क्षमा को तेजस्वी बनाता है। क्षमा के स्वरूप और उसकी क्रियान्विति के संबंध में कोई निश्चित सिद्धांत नहीं बन सकता। अपराध करने वलों और क्षमाशील रहने वालों की अनेक भूमिकाएँ हैं। एक मुनि, अपराधी व्यक्ति को क्षमा नहीं करता है तो उसका मुनित्व संदिग्ध हो जाता है। भगवान महावीर के साधना काल में कितनी बार प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा की गईं, पर महावीर का महावीरत्व उनकी क्षमाशीलता में ही पल्लवित हुआ। राजधर्म क्षमा को ऐकांतिक महत्व नहीं देता। दुष्ट व्यक्ति को दंडित करना राजधर्म के अनुसार विहित है। दंडनीय को दंड न देना राजधर्म का लोप माना जाता है। इससे अराजकता को प्रोत्साहन मिलता है और अपराधी तत्व निरंकुश हो जाते हैं। दंडसंहिता की सारी धाराएँ अपराधों का प्रतिकार करने के लिए हैं। समाज के साथ अपराध और अपराधों के साथ दंड-पद्धति का सुजन स्वाभाविक माना जाता है। किंतु यह लोक-व्यवस्था या राज्य-व्यवस्था का सिद्धांत है। अत्यात्म की भूमिका इससे भिन्न है। इसमें अपराधी व्यक्ति स्वयं अपराध-शोधन का प्रयाश्रित स्वीकार करता है। अपराधी को बलात दंडित करने या उसके प्रति प्रोध प्रदर्शित करने की बात क्षमा-धर्म द्वारा संभव नहीं है। साधना के पथ पर अग्रसर साधकों के लिए क्षमा के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही नहीं हैं। क्षमा का प्रभाव अप्रतिहत होता है, पर क्षमा-धर्म की साधना है बहुत कठिन।



सनत जैन

वर्तमान समय में देश का आम नागरिक, विशेषकर निम्न और मध्यम वर्ग, महंगाई और कर्ज के दोहरे संकट से जूझ रहा है। आज जब एक तोला सोना 90,000 रुपए के पार पहुंच गया है। वहीं आम आदमी की आय और वेतन में उतनी वृद्धि नहीं हुई है। यह आर्थिक असमानता न केवल आम जीवन को कठिन बना रही है। बल्कि सामाजिक और मानसिक तनाव को भी बढ़ा रही है। वर्तमान में मनो रोगियों की संख्या बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है। बड़ी संख्या में लोग आत्महत्या करने लगे हैं। यह चिंता का सबसे बड़ा विषय है। जब-जब महंगाई बढ़ी है, उसके साथ लोगों की आय भी बढ़ती है। पिछले 75 वर्षों कि इतिहास में महंगाई और कमाई के बीच इतना बड़ा अंतर कभी देखने को नहीं मिला। केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें पेट्रोल और डीजल में 35 से 40 रुपये प्रति लीटर टेक्स आम जनता से वसूल कर रही है। जिसके कारण खाने-पीने से लेकर हर चीज की कीमतें कई गुना बढ़ गई हैं। पिछले 10 वर्षों में जीएसटी एवं अन्य टेक्स बढ़ाकर



प्रमोद भार्गव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सुरक्षा मामलों की केंद्रीय कैबिनेट समिति (सीसीएस) ने सरकार से सरकार के बीच सौदे के तहत 64 करोड़ रुपये की लागत से भारतीय नौसेना के लिए 26 राफेल-एम (मैरी टाइम) विमानों की खरीद को अंतिम रूप दे दिया है। इन्हें विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर तैनात किया जाएगा। भारत 22 एक सीट वाले और 4 दो सीट वाले लड़ाकू विमान खरीदेगा। हिन्द प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप के बीच इन विमानों को खास तौर पर भारतीय नौसेना के लिए डिजाइन किया गया है। राफेल विमानों की इस खरीद में खंस सरकार की ओर से नौसेना के लिए हथियार, सिमुलेटर, कलपुर्जे, सहायक उपकरण, स्पेयर पार्ट्स और पायलटों की प्रशिक्षण दिया जाना भी शामिल है। खंसीसी एयर स्पेस कंपनी डर्साॅल्ट एविएशन द्वारा निर्मित राफेल-एम विमानों की आपूर्ति अनुबंध पर हस्ताक्षर होने के बाद 37 से 65 महीनों के भीतर की जाएगी यानी आपूर्ति 2030-31 तक हो जाएगी। खंस से भारत ने पूर्व में ३६ पूर्व राफेल विमान खरीदे हैं। यह समुद्री लड़ाकू विमान नौसेना की जरूरतों के हिसाब से विकसित किया गया है। यह विमान पुराने विमान मिग-29 का



जनता से वसूल किये जा रहे हैं। जिसके कारण आम आदमी महंगाई की मार से कराह रहा है। आर्थिक मंछी ने बेरोजगारी बढ़ा दी है। करोड़ों पढ़े-लिखे स्नातक परस्नातक युवाओं को पिछले 10 वर्ष से नौकरी नहीं मिल रही है। मनरेगा में भी बजट घटा दिया गया है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में हाहाकार मचा हुआ है। 78 वर्षों के इतिहास में यह पहली बार देखने को मिल रहा है। 1947 में सोने की कीमत मात्र 88.62 रुपए प्रति तोला थी, तब आम आदमियों का वेतन 15 से 30 रुपए महीना होता था। प्रधानमंत्री, मंत्री, सांसदों, विधायकों का वेतन डेढ़ सौ से ढाई सौ रुपया प्रतिमाह होता था। तुलनात्मक रूप से वेतन से प्रधानमंत्री 300 ग्राम तक सोना खरीद सकते थे। आज प्रधानमंत्री का वेतन लगभग दो लाख रुपए प्रतिमाह है। इस वेतन से

वे मात्र 20 ग्राम सोना ही खरीद सकते हैं। बीते सात दशकों में सोने की कीमतों में 1000 गुना से अधिक की वृद्धि हो चुकी है। जबकि आय में महज 50 से 60 फीसदी का इजाफा हुआ है। इस विसंगति का सीधा प्रभाव आम लोगों पर पड़ा है। बढ़ती महंगाई के कारण लोगों की बचत खत्म हो चुकी है। जरूरतें पूरी करने के लिए बैंक और साहूकारों से कर्ज लेना उनकी मजबूरी बन गई है। कई परिवार सोना गिरवी रखकर कर्ज ले रहे हैं, किस्टें चुका पाने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में गिरवी रखा हुआ सोना बैंक और वित्तीय संस्थान नीलाम कर रहे हैं। आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया होने के कारण, मध्य एवं निम्न वर्ग के परिवार अपने बच्चों की शिक्षा और पोषण जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं कर पा रहे हैं। आर्थिक

उपलब्धि : राफेल विमान से बढ़ेगी नौसेना की ताकत



ठोस विकल्प साबित होगा। ऐसे विमानों की तलाश में भारत लंबे समय से था क्योंकि हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन वर्चस्व बढ़ाने में लगा है। हिन्द महासागर में अंतरराष्ट्रीय नियमों का लगातार उल्लंघन करता रहा है जबकि खंस की मंशा इस सागर को खुले और समावेशी क्षेत्र के रूप में सुरक्षित बनाए रखना है। एक तरह से इन विमानों के सौदे को चीन की मनमानी के विरुद्ध भारत और खंस की साझा रणनीति का हिस्सा भी माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि राफेल की खरीद इसलिए उचित है कि भारतीय वायुसेना राफेल के रख-रखाव से संबंधित अघोसंरचना तैयार कर चुकी है। यही नौसेना के काम आ जाएगी। इससे धन की बचत भी होगी। ये विमान उसी डॉसल्ट कंपनी से खरीदे जा रहे हैं, जिससे 2016 में 36 राफेल विमान खरीदे गए थे। यह खरीद विवादित रहते हुए लोक सभा में चर्चित रही थी

जबकि इनकी आपूर्ति के बाद भारत की रक्षा शक्ति बढ़ी है। भारत और खंस के बीच रक्षा क्षेत्र में बढ़ते सहयोग के दौरान यह अहम उपलब्धि है। भारत सरकार पिछले पांच साल से आईएनएस विक्रांत के लिए नये लड़ाकू विमान खरीदने की योजना पर विचार कर रही थी। तीन साल पहले अमेरिकी बोईंग एफ-ए-18 सुपर हॉर्नेट और खंसीसी राफेल-एम में से किसी एक को चुनने का काम शुरू हो गया था। भारतीय नौसेना ने 2022 में गोवा में दोनों विमानों के परीक्षण किए। इनकी खूबियों और खामियों को लेकर एक रिपोर्ट तैयार की। रिपोर्ट के बाद भारतीय रक्षा विशेषज्ञों ने राफेल-एम को आईएनएस विक्रांत की जरूरतों के अनुकूल पाया। यह विमान 15.27 मीटर लंबा और 10.80 मीटर चौड़ा है। इसकी ऊंचाई 5.34 मीटर है। इसका कुल वजन 10,600 किग्रा. है। यह 1912 किमी. प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ान भरेगा। ३७००

किमी. के व्यास में यह 50,000 फीट ऊंचाई तक उड़ सकता है। चूंकि ये विमान पोत से उड़ान भरते हैं, इसलिए इनमें ऊंची और लंबी छलांग लगाने की क्षमता के लिए ताकतवर इंजन होना चाहिए क्योंकि पोत पर विमान को छोटे मार्ग से उछाल मार कर उड़ान भरनी होती है। ये सब खूबियाँ इस विमान में हैं। याद रहे देश की रक्षा ताकत बढ़ाने की दृष्टि से प्रधानमंत्री मोदी ने 2016 में खंस यात्रा के दौरान खंसीसी कंपनी डर्साॅल्ट एविएशन से 36 राफेल जंगी जहाजों का सौदा किया था। यह सौदा अरसे से अधर में लटका था। फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति खंस्या ओलांद और प्रधानमंत्री मोदी के बीच सीधे बातचीत के बाद यह सौदा अंतिम रूप ले पाया था। इस लिहाज से इस सौदे के दो फायदे देखने में आए थे। एक, ये युद्धक विमान जल्द से जल्द हमारी वायुसेना के जहाजी बेड़े में शामिल हो गए। दूसरे, इस खरीद में दलाली की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी, क्योंकि सौदे को दोनों राष्ट्र प्रमुखों ने सीधे संवाद के जरिए अंतिम रूप दिया था। हालांकि रक्षा उपकरणों की खरीदी से अनेक किंतु-परंतु जुड़े होते हैं, सो इस खरीद से भी जुड़ा गए थे, लेकिन कोई कमी सामने नहीं आई। भारतीय सेना के लिए लड़ाकू विमानों की खरीद इसलिए जरूरी थी, क्योंकि हमारे लड़ाकू बेड़े में शामिल ज्यादातर विमान पुराने होने के कारण जर्जर हालत में हैं। अनेक विमानों की उड़ान अवधि समाप्त हो जाने के बावजूद उनका इस्तेमाल किया जाता रहा है। इन कारणों के चलते आये दिन जेटों के दुर्घटनाग्रस्त होने की घटनाएं सामने आती रहीं। इन दुर्घटनाओं में वायु सैनिकों के बिना लड़े ही शहीद होने का सिलसिला बन गया था। राफेल विमानों की खरीद के बाद दुर्घटनाओं पर तो विराम लगेगा ही, हमारे सैनिक बिना लड़े शहीद भी नहीं होंगे।

Universe: Baisakhi’s spiritual harvest

The harvest festival is widely celebrated in India. This time of the year is of great significance for many states. It is celebrated in Assam as Rongali Bihu, where it marks the start of a new agricultural cycle and the beginning of a new year. In Kerala, Vishu ushers in the Malayali New Year, as does Puthandu in Tamil Nadu and Pohela Boishakh for Bengalis, in both India and Bangladesh. For Punjab, Baisakhi also has spiritual significance. We all know of how Guru Gobind Singh founded the Khalsa on the day of Baisakhi in 1699. Speaking out against injustice had been stressed from the time of Guru Nanak Dev, who wrote the hymns collectively called Babur Bani. In these, he severely criticised the excesses of the invading force and the plight of the people caught between the two warring armies. He reflected on the injustice, on the pain and suffering that followed the invasion, as well as the nature of Divine Will. The Gurus that followed him and their followers had a long history of resisting autocracy and injustice, and speaking truth to power, which is too well known to reiterate. Guru Gobind Singh’s transformation of the spirit of the Sikhs into that of the Khalsa was a spiritual harvest. The seeds of values that the first nine Gurus sowed in the fertile minds of their followers had now grown to fruition. Gurbani guided the Sikhs and showed them the path. Now it was time to have a cadre of the committed who would represent the highest spiritual values inculcated in them by the Guru. They would be exemplars who stood out because of their deeds and convictions. They would follow the Guru’s teaching and act upon it. Amrit transformed the Sikhs spiritually, and the Guru set an unprecedented example of himself taking amrit from his Sikhs. He created a community of Sikhs where they would submit to the will of the Almighty and follow Guru Gobind Singh’s injunction: “Manas ki jaat sabhe ekeh pehchaanbo”, by recognising all humanity as one. What were the Khalsa like? Let’s take one example. Baba Deep Singh was the scholar who scribed Guru Granth Sahib and at the Guru’s direction, immersed himself in teaching and explaining Gurbani at Damdama Sahib after the Guru left. He embodied the spirit of the Khalsa. In popular iconography, he is remembered as a great warrior who fell in battle while defending Harmandir Sahib in Amritsar. The spiritual discipline that he followed, his knowledge of, and efforts to propagate Gurbani and the strength of his conviction do not get enough attention, but they made him what he was — a true scholar-warrior. The Khalsa were transformed from inside, and they were required to wear distinctive symbols that set them apart, to themselves, and to the people at large. The spirit of the Khalsa at Anandpur Sahib would awaken the Sikhs and give them the spiritual strength that enabled them to fight tyranny. After being tested in many ways, they would emerge as true followers of the Guru and as spiritually strong, empathetic and socially responsible individuals ready to stand for the wronged. “Deh Siva bar mohe eh hai/Subh karman te kabhon na taron/Na daron ar so jab jaye laron/ Nischay kar apni jeet karon”, the popular hymn of the 10th Guru encapsulates the Khalsa’s prayer for a life of courage and bravery that gives the strength to embrace good deeds and win with rightful conviction. The spiritual core of Gurbani and simran make the Khalsa stand up for the weak, even as they conduct their day-to-day duties to their family and society, ever ready to help the needy. These are qualities we would well want in every human being. The spiritual harvest of Baisakhi was transformative, indeed.

Partisan governors: The shrinking space for dissent

To make matters worse, such biased derelictions by erring appointees are encouraged with telling silences and promotions.

Conduct of constitutional offices and institutions warrants apolitical bearing and expressions. While legality is imperative, upholding the spirit of constitutional morality and unconstrained 'voice' is the key. Is India witnessing the erosion and diminishment of such offices and institutions or are they displaying the spine to question the powers-that-be? The answer lies in the capacity to recollect the last time when a dissenting note was struck against the ruling dispensation at the Centre by the Rashtrapati Bhawan, Raj Bhawan/Raj Niwas, investigative agencies, et al? The displeasures are seemingly reserved exclusively for opposition parties or states run by the same. To be fair, this is not a new phenomenon as there have always been taints of partisanship in earlier times too. From the infamous surrender on the night of June 25, 1975 (imposition of Emergency) to the then Uttar Pradesh Governor Romesh Bhandari’s ill-advised recommendation to dismiss Kalyan Singh’s government, history is instructive of misuse of constitutional offices.

However, there have been many instances of presidents and governors who refused to kowtow and upheld the dignity and majesty of democratic and constitutional traditions. Examples like KR Narayanan, APJ Abdul Kalam to even Zail Singh, standing up to attempts to reduce their offices to "rubber stamps" are legendary. But all that was in the distant past. Today, successive occupants to the highest office of the land on the Raisina Hill have quietly endorsed all Bills and debates (some contentious and polarising) with no call to caution, let alone "reconsider". The highest offices in the states and union territories, too, have shown similar acquiescence, with no space to disagree, save for disagreements with opposition parties or against the opposition party-led governments. The timeless adage of a thriving democracy that "disagreement is the highest form of patriotism" has long been buried. Foundational fathers of the "constitutional idea of India", including Dr BR Ambedkar, had insisted that a governor ought not to use his/her discretion as a "representative of a party" but as the "representative of the people as a whole." It implied a fierce independence that owed no obligation to the partisan persuasion that had elevated them to the high office in the first place. While competitive politics by all national or regional parties are rumbustious, unsubstantiated, and even unhinged, it was hoped that the constitutional appointees would act like the

proverbial "adults in a room" to ensure that constitutional propriety reigned supreme once the dust and din of accusations had settled. Sadly, recent times have seen a flurry of gubernatorial outreaches that have blurred the essential lines between constitutional posts and politicians. To make matters worse, such partisan derelictions by erring appointees are not shunned. Rather, they are encouraged with telling silences and promotions. It is not as if it is only the career politicians in gubernatorial roles who are found unhealthily enthusiastic on partisan



matters. Even those from professional backgrounds in supposedly apolitical institutions are seen participating in matters which militate against the mandated restraint and sobriety. One running case of the governor-versus-chief minister saga (obviously in an opposition party-ruled state) is from Tamil Nadu. While the state politicians (irrespective of party) are never a modicum of constitutional morality, given the excesses, "manufactured emotions", and leniencies that they practice, it is incumbent on the "conscience-keeper of the Constitution", ie, the governor, to not retaliate act by act. Tamil Nadu has had its own complicated history of dissonance, with contentious issues like language, culture, etc, but over time, most sore points had healed and an overarching theme of acceptance and natural inclusivity prevailed. Today, a sense of reactionary and

regional revisionism with perceived impositions by "Delhi" has returned. The agendas of the past are making a comeback. While the regional and national political parties cannot escape blame for the regressive slide, it is conjoining of the gubernatorial offices in the partisan battles that is increasingly discomfoting. Recently, it took the Supreme Court to call out that actions of the sitting Governor of Tamil Nadu as "arbitrary" and "illegal", when ruling that the Governor cannot reserve Bills for the President after withholding assent. The top court presciently reminded, "All actions of the Governor must align with the principle of parliamentary democracy", suggesting a diminishment of the vital federal spirit, as envisaged in the Constitution. On cue, it corrected the action by noting, "All actions taken by the Governor thereto for the 10 bills are set aside. These Bills shall be deemed to be cleared from the date it was re-presented to the Governor." Incidentally, the said Governor has had a distinguished career in the Indian Police Service in amongst the most politicised states (in terms of Center-state relations), ie, Kerala. Hence, he would be expected to be well versed with the dangers of partisanship. Later, he was to assume very responsible positions in other professional and ostensibly apolitical institutions like the Central Bureau of Intelligence (CBI) and the Intelligence Bureau (IB) and even a stint as Deputy National Security Adviser, which would have grounded him in the need to maintain the lofty spirit of independence and constitutional morality. But his gubernatorial stint has been marked by inelegant run-ins with the state government. For example, when he refused convention to deliver a prepared speech and pursuant to the same, omitted words such as secularism, compassion, women empowerment, self-respect and portions on Dravidian leaders and BR Ambedkar. It would be naïve to assume that the selected omissions were not conforming to any partisan preference. In times that be, valourising the dominant partisan thought is all-pervasive and the crucial power to dissent is seemingly exercised at only the opposition side. If the ruling dispensation truly seeks to be the "party with a difference" (as claimed), it needn't invoke the playbook of the past. Indians and Indian politics deserve better.

A regressive verdict

HC contradicts SC stand on consent



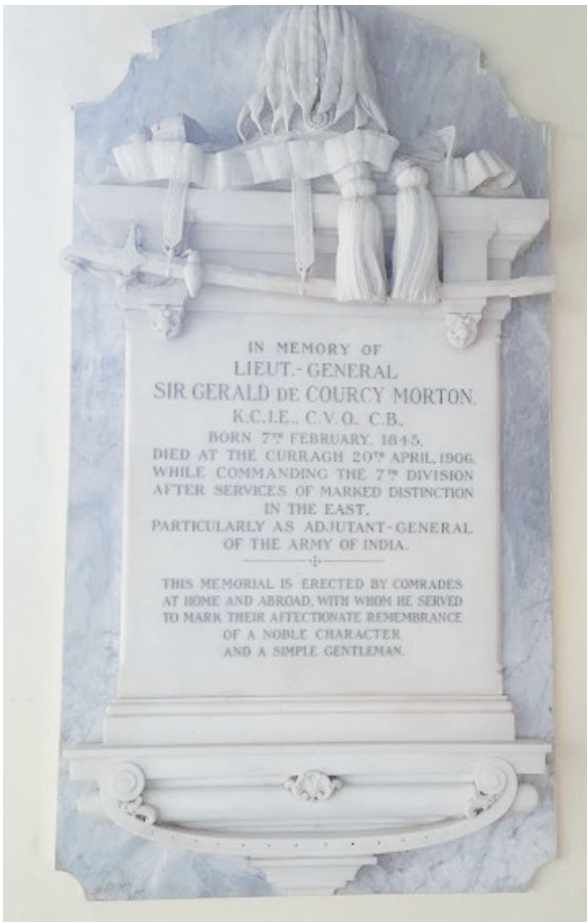
THE Allahabad High Court’s decision to grant bail to a rape accused on the grounds that the “victim herself invited trouble” is as appalling as it is regressive. In brushing aside the central issue of consent, the court’s words dangerously echo outdated, patriarchal tropes that have no place in modern jurisprudence. Justice Sanjay Kumar Singh’s observations — that the woman was “competent enough to understand the significance of her act” and that her visit to the accused’s house after consuming alcohol was “inviting trouble” — amount to little more than judicial victim-blaming. This not only shames the survivor but also signals to society that accountability lies with the victim rather than the perpetrator. It flies in the face of established legal precedent, including the Supreme Court’s categorical stand that “no means no”. This stance has been reaffirmed in various rulings interpreting

Section 114-A of the Indian Evidence Act. In rape cases, the law presumes absence of consent when the

victim testifies so. This legal provision was designed to protect survivors from invasive scrutiny and to shift focus onto the actions of the accused. Alarminglly, this is not an isolated incident. In February 2025, the same court granted bail to a rape accused on the condition that he marry the survivor within three months of release. Such judgments not only undermine the gravity of the crime but also risk coercing survivors into unwanted relationships, further compromising their autonomy and dignity. The Allahabad High Court, by bypassing this statutory safeguard, undermines decades of legal reform and feminist struggle. The question before the court was whether the accused forced himself upon the woman without her consent — not what she drank, where she went or whom she trusted.

Let sleeping statues stand, why lose sleep over them

There is more to our nation’s destiny than the removal of statues and the renaming of towns



worming a way out. A year or so back, one visited Rashtrapati Bhavan in New Delhi and noticed that the bust of Edwin Lutyens, the architect of this

magnificent building, which was placed at the head of an impressive staircase, was missing. “It has been sent for restoration,” I was told. “Ah well, another bust bites the dust” was what one instinctively thought. I was there a few weeks back and was pleasantly surprised to find it back in the place where it had been for decades. Some conversations later, one came to learn that it was on its way out and would shortly be replaced by a statue of C Rajagopalachari, the first Indian Governor-General who took office in 1948 after Lord Mountbatten demitted it. Placing a statue of Rajaji, as he was fondly called, seems logical, the removal of Lutyens’ does not. In another part of Delhi lies Coronation Park — a place that I’d call a ‘Graveyard of Empire’. A half-hearted creation with half-hearted maintenance, the area of the park covers a substantial 53 acres. The only time the place seems to come alive is around lunch time, when people gather and eat in the shade of trees, and in the evenings, when children use the small playground. Rare groups of tourists occasionally come by. In various phases of wither, here rest some of the statues that have been removed from other parts of the city and placed here. ‘Coronation Park’ was the site of the three great durbars of 1877, 1903 and 1911. The third, in 1911, announced the shift of the capital from Kolkata to New Delhi. An obelisk marks the place where King George and Queen Mary received homage from the Indian princes and others. Today, just across from that strategically placed obelisk, is the forlorn statue of the one-time King Emperor of India. This was what stood in the canopy near India Gate, which now holds the statue of Subhas Chandra Bose. The king’s 70-foot-high

statue was an exemplary piece of sculpture that had been executed by Charles Sargeant Jagger. At a time when one in four persons on our planet lived under the shadow of the British flag, this may have been an exceptional piece of art, but perhaps, more importantly, was a powerful political statement. It continued to remain in its place by India Gate for several years after Independence. When American President Dwight Eisenhower visited India in 1959, he is believed to have remarked something to the effect that “America had got rid of its King George and what was India still doing with theirs?” After the statue was vandalised in 1966, it was removed and subsequently placed where it now stands. The colonisation of history along with the colonisation of the country was a fairly simple process. Everything that was pre-colonial was dismissed. The colonial power portrayed itself as the lord and saviour of India, Africa, and the Caribbean — or of any other handy part of the world. De-colonising is trickier. The slope is slippery and one cannot be as sweepingly dismissive. With his consistent perspicacity, Mark Twain noted: “Nations do not think, they only feel. They get their feelings at second hand through their temperaments, not their brains.” Every once in a while, a moment comes when an individual or nation stands at the cusp of greatness or failure. We stand at that moment. There is more to our nation’s destiny than the removal of statues and the renaming of towns. There is a thin fine line that statues may also walk. That having been said, there is only national maturity and confidence to display by allowing certain sleeping statues to stand.

On the Merry-go-Round - Right Now, Right Here

New Delhi. Some years back, I started a series in this column titled ‘Right Now’, which was the title of a popular rock song released over three decades ago by the music group, Van Halen. The lyrics of this song proposed living for the moment and not being afraid of making a change. So, in this fortnight’s column, I propose to take you, my valued readers, on a Giant-Wheel ride ‘Right Now’ across our financial markets.Right now, the dust that seemed to be settling on the just ended financial year has turned into a storm across global markets following the launch of fresh tariffs by the United States of America and its subsequent pause for countries other than China. For the record, the financial year gone by actually ended up accentuating the bull run at the Indian bourses. Does this mean the current financial year will be one marked by even greater volatility? Perhaps so, but as far as I am concerned, even if it does, what matters is how well the Indian government, as also an investor is able to ride the tariff storm.

Right now, one needs to tread cautiously as the tariff situation just like Covid, is unprecedented. In fact, even more so as Covid like situations had been seen and faced sporadically in the past. Clearly, the real target of the tariffs is China, but they have the economic firepower to take on the US in a prolonged tariff war that ebbs and rises like a tide.

Right now, India could be a potential beneficiary of a prolonged trade war between America and China, given that its government has good relations with the American government and is working on striking a bilateral trade deal that will be mutually beneficial. Heightened economic activity with China which will now be more eager to engage with India more actively to gain wider access to its large market, could be a positive fallout as also peace on the borders which could be another big plus. Right now, there are seasoned market participants doing more than hedging their equity bets with gold. The price of the precious yellow metal continues to surge. And, if the equity markets remain even half as volatile as it has been over the last fortnight, can there be a further uptick in gold prices? Depending on one’s answer to this question, one could either top up the yellow metal or simply sit back and let the growth in value happen on its own sans the deployment of further capital.

Indian Stock Market Set For Data-driven Outcomes This Week

Mumbai. The current week is poised to be a crucial one for global markets, including the Indian benchmark indices, as inflation, industrial activity and employment data line up across the world’s largest economies, a report said on Monday.

Investors can expect increased volatility and sharper focus on central bank cues.The week of April 12 to April 19, 2025, brings a host of significant economic data releases from major global economies, which are expected to guide market sentiment and influence monetary policy expectations.“In India, the Wholesale Price Index (WPI) for March will be released on April 15. This indicator will provide insights into wholesale inflation trends, which are crucial for understanding cost pressures at the production level and could have implications for the Reserve Bank of India’s future rate decisions,” said a note by Bajaj Broking Research.From the United States, key data will begin with the Industrial Production (YoY) numbers for March, scheduled for release on April 16. This data will offer a snapshot of the strength of the manufacturing sector and overall industrial activity.

Following that, on April 17, the Initial Jobless Claims report will be closely watched by investors and policymakers alike. As a leading indicator of the labor market’s health, any unexpected uptick in claims could signal potential softness in employment, influencing the Federal Reserve’s stance on interest rates, the note said.China, too, will be in the spotlight on April 16 with a trio of critical economic indicators. The country will report its Q1 GDP growth (quarter-on-quarter), Industrial Production (YoY) for March, and the Unemployment Rate for March.“Together, these figures will offer a comprehensive view of China’s post-pandemic economic recovery, domestic demand trends, and labor market conditions. Strong data from China could boost investor confidence globally, particularly in commodity and industrial sectors that are closely tied to Chinese demand,” said Bajaj Broking Research.

Bank of India Withdraws Special 400 Days FD Scheme, Reduces Interest Rates On Other Maturities

New Delhi. Bank of India, has announced to withdraw its special fixed deposit scheme for 400 days wherein it waws offering interest rate upto 7.30%.

Also, the public sector bank has reduced Rate of Interest on its short-term & medium-term Fixed Deposits for various maturities w.e.f 15th April 2025. The bank has reduced its rate for Fixed Deposits for amount of less than Rs.3.00 Crs and is now offering 4.25% for deposits maturing between 91 days and 179 days and 5.75% for 180 days to less than 1 year. Deposits for one year would get an interest rate of 7.05% while those above 1 year up to 2 years would get 6.75%. The deposit in the amount bucket of 3 crores to less than Rs 10 Crs, Bank will be offering 5.75% for deposits maturing between 91 days and 179 days, 6.25% for 180 days to up to 210 days, and 6.50% for deposits of 211 days to less than one year. Deposits for one year would get an interest rate of 7.05% while those above 1 year to less than 2 years would get 6.70%. The revised rates are to be made effective from 15th April, 2025. An additional rate of interest of 0.65% on deposits of Super Senior Citizens and 0.50% on deposits of Senior Citizens below Rs.

India’s Semiconductor Industry Likely To Double Revenue To \$108 Bn By 2030: Report

Nilesh Shah flags tax loophole that can be exploited by NRIs
Wealthy individuals may shift abroad to avoid capital gains tax
Shah calls for law changes to prevent tax loopholes for NRIs

New Delhi. If you have significant capital gains tax liability on eligible securities, shift to the UAE for more than 183 days. Your family holiday abroad will be funded from the savings

on capital gains tax.” That is Kotak Mutual Fund MD Nilesh Shah’s blunt message about what he sees as a rising tax dodge among India’s wealthy.What he means is that some high-net-worth individuals are temporarily shifting their residence abroad to avoid paying capital gains tax in India.

Shah shared a post on social media platform X, citing a recent ruling by the Mumbai Income Tax Appellate Tribunal (ITAT), which allowed a Singapore-based investor to claim a tax exemption on more than Rs 1.35 crore in capital gains from mutual fund units. The tribunal cited the India-Singapore tax treaty, which, like several other treaties India has signed, allows such gains to be taxed only in the investor’s country of residence.

Here is how the loophole works. India’s tax treaties with countries such as the UAE, Singapore, Mauritius and Portugal contain provisions that let residents of those countries pay capital

gains tax where they live, not in India, when selling mutual fund units. Since some of these countries, including



the UAE, do not tax capital gains, investors effectively pay nothing. The only condition is residency. If someone stays in the foreign country for more than 183 days in a financial year, they qualify as a non-resident under Indian tax rules and can use this benefit. Shah said, "We should amend the laws

immediately to ensure that tax is paid in the host country and credit is taken in the reciprocal country. If we have to persist with tax benefits for larger causes, they should only be available to foreign citizens and not to “seasonal non-residents.””The path of fiscal prudence runs through taxes. Tax compliance depends on an equitable distribution of the burden. Equitable distribution of tax burden will not happen if high taxpayers are incentivised to move abroad. "Today it might be a small amount, but tomorrow it could open a floodgate," he added.To make his point, Shah quoted a Gujarati saying: “Ghar na chokra ghanti chhate ane padosi ne aato.” It roughly translates to, “children at home lick the grinder while the neighbours get the flour.” In other words, those who stay and pay taxes in India might end up worse off than those who leave to avoid them.Shah described this growing behaviour as “seasonal non-residency.

Investor visits Mumbai slum, uncovers uncomfortable truth about 'Make in India'

NEW DELHI. The ‘Make in India’ plan was started in 2014 to make India a big name in global manufacturing. The idea was to make India the top choice for companies around the world to set up their factories. But more than ten years late, is India really making things?

Veteran investor Shankar Sharma recently shared a personal experience that raised fresh questions about India’s manufacturing reality. During a visit to a slum in Mumbai, he thought he had found proof of local innovation. In a small workshop, he saw well-made gym equipment on display and asked if the items were built there.“We are on the cusp of a manufacturing boom finally,” Sharma wrote on social media platform X, recalling what he had first thought.But his excitement faded fast. When he asked the shop owner if the equipment was really made there, the reply was simple and

honest: “Sir, I import from China and assemble it here. Their quality, finish, look, is simply unmatched.”For him and many others, the post showed a hard truth. A lot of what we call “Made in India” is actually made in China and



only put together here.

His post sparked reactions from several users who shared similar views. One user wrote, “We can’t even make everyday items like nail clippers, luggage, or bathroom weighing scales to the quality that China does. Cars and electronics toh door ki baat hai (those

are far-off dreams).”Another commented, “It’s time the world accepted that China is ahead.” This comes at a time when many countries, especially the United States, are looking for other places to make goods instead of depending only on China. The COVID-19 pandemic and the trade war between the US and China made this shift feel urgent.With US tariffs on Chinese goods now going as high as 145%, and India not facing such trade barriers, the timing seems right for India to step up.But the situation on the ground tells a different story.One of the main problems is how factories are built and allowed to operate in India. The Economic Survey for 2023–24 mentions a study by Prosperiti that shows how tough it is to set up a factory in many Indian states. Local rules require things like wide spaces between buildings, lots of parking spots, and limits on how tall or large factories can be.

Trump's commerce secretary says new electronics tariff exemptions are temporary, chip tariffs coming

NASHVILLE. Tariff exemptions announced Friday on electronics like smartphones and laptops are only a temporary reprieve until the Trump administration develops a new tariff approach specific to the semiconductor industry, U.S. Commerce Secretary Howard Lutnick said Sunday.hite House officials, including President Donald Trump himself, spent Sunday downplaying the significance of exemptions that lessen but won't eliminate the effect of U.S. tariffs on imports of popular consumer devices and their key components.

"They're exempt from the reciprocal tariffs but they're included in the semiconductor tariffs, which are coming in probably a month or two," Lutnick told ABC's "This Week" on Sunday.Trump added to the confusion hours later, declaring on social media that there was no "exception" at all because the goods

are "just moving to a different" bucket and will still face a 20% tariff as part of his administration's move to punish China for its role in fentanyl trafficking.

The Trump administration late Friday had said it would exclude electronics from broader so-called reciprocal tariffs, a move that could help keep the prices down for phones and other consumer products that aren't usually made in the U.S.China's commerce ministry in a Sunday statement welcomed the change as a small step even as it called for the U.S. to completely cancel the rest of its tariffs.

Sparing electronics was expected to benefit big tech companies like Apple and Samsung and chip makers like Nvidia, though the uncertainty of future tariffs may rein in an anticipated tech stock rally on Monday.U.S. Customs and Border Protection said items like

smartphones, laptops, hard drives, flat-panel monitors and some chips would qualify for the exemption. Machines used to make semiconductors are excluded too. That means they won't be subject to most of the tariffs levied on China or the 10% baseline tariffs elsewhere.

It was the latest tariff change by the Trump administration, which has made several U-turns in its massive plan to put tariffs in place on goods from most countries. White House officials sought to dismiss any suggestion of a reprieve as the weekend progressed."It's not really an exception. That's not even the right word for it," U.S. Trade Representative Jamieson Greer told CBS' "Face the Nation" on Sunday. "This type of supply chain moved from the tariff regime for the global tariff, the reciprocal tariff, and it moved to the national security tariff regime."

RBI may pay record Rs 2.5 lakh crore dividend to centre in FY25

RBI may pay record Rs 2.5 lakh crore dividend to centre for FY25
Income from dollar sales and interest boosted RBI's earnings
Analysts expect final dividend to range Rs 2.8-3.5 lakh crore

New Delhi. The Reserve Bank of India (RBI) is likely to pay a record dividend of around Rs 2.5 lakh crore to the government for the financial year 2024-25 (FY25), according to economists and analysts. This would be higher than last year’s large payout of Rs 2.1 lakh crore and could reduce the government’s need to borrow more money this year.

If the actual payout crosses Rs 2.5 lakh crore, it would be nearly 20% more than the dividend the RBI gave last year. It would also easily surpass the government’s own budget estimate of Rs 2.2 lakh crore for the year. Analysts say this would be a big support for the Centre’s finances, especially in a year

when the government is expected to spend more to boost the economy.

The expected jump in the dividend is due to two main reasons. First, the RBI sold large amounts of US dollars in the market to keep the rupee stable. These sales brought in income. Second, the central bank earned interest from giving funds to banks through its liquidity operations.One overseas banking group believes the dividend could be as high as Rs 3.5 lakh crore, which would be the highest ever from the RBI to the government.The RBI is likely to announce the exact dividend amount in late May. Last year, the payout surprised many as it was double what most had expected.These funds are important for the government as they help in reducing the fiscal deficit — the gap between the government’s income and spending. When the government receives more money through dividends, it does not need to borrow as much from the market. This also helps lower bond yields and improves liquidity in the banking system.Madhavi Arora, Chief Economist at Emkay Global Financial

Services, told The Economic Times, “This dividend gives the government room to correct their fiscal deficit, especially since there has been a drop in tax collection due to the slowdown in



the economy. Additionally, there will be very high liquidity that would be coming via this route, which would be good for the bond market, pushing down yields especially of the shorter tenured bonds.”

Emkay expects the final dividend amount to be in the range of Rs 2.8 lakh crore to Rs 3 lakh crore.Other analysts agree that there is a strong chance of a bumper dividend. Dhiraj Nim, economist and

foreign exchange strategist at ANZ Banking Group, said, “The RBI undertook significant dollar sales to support the rupee and maintain exchange rate stability. Additionally, tight systemic liquidity prompted the RBI to extend funds to banks, thereby contributing to its interest income. Therefore, the dividend payout for FY25 is likely to be large.” Nim expects the transfer to be between Rs 2.5 lakh crore and Rs 3.5 lakh crore.

Analysts have looked at the RBI’s balance sheet and found enough signs that the central bank has earned more than last year. Apart from dollar sales and interest income, the RBI’s gains from its investment portfolio may also have added to the surplus.This transfer of surplus comes at a time when the government needs funds to continue supporting economic growth, especially as some sectors have shown signs of slowing down. A larger-than-expected dividend would give the Centre more room to spend without widening its fiscal deficit too much.

AAP succeeds at trapping BJP in narrative snare

New Delhi. Politics today is in a big way about narratives. The Rekha Gupta government, which has taken charge of Delhi, in the past two months has tried to set the development narrative. It has also tried to create a narrative, and rightly so, against the preceding Aam Aadmi Party (AAP) government being corrupt. The tabling of the held-up reports of the Comptroller and Auditor General (CAG) ostensibly have strengthened their stand.

This grandstanding has however largely been from the Ministerial pulpits within the assembly. The AAP leadership, finding itself on the back foot, as part of strategy resisted engaging with the government on the floor of house creating pandemonium and being marshalled out or walking out on its volition. The BJP, however, must realise that its rival is a party whose rise has been fuelled by creating narratives in its favour. It doesn't have qualms about its tallest leader Arvind Kejriwal creating a 'storm' on power cuts by posting on microblogging site X about an innocuous incident.

This forced the Delhi government to come out



with clarification both inside and outside the house. This whole episode shows the strategy of the AAP to 'embarrass' the Rekha Gupta government. Their strategy would be to hit the government with what they call 'citizen' issues and then scoot leaving the government to do the explanations.

They managed to do this on the rise of the fee in the private unaided schools and then on the matter of the issue of the permanent free bus ride passes for the women residents of the national capital. AAP's Delhi unit leader and a prominent face, Saurabh Bhardwaj addressed a press conference alleging how

he foresees corruption entering into the process of the issue of passes. And now the issue of saffron activists forcing closure of fish-selling kiosks in Market No. 1 of Chittaranjan Park, the Bengali dominated locality falling within the Greater Kailash assembly constituency of South Delhi. The said 'outrage' against the move forced the president of Delhi BJP, Virendra Sachdeva and the local BJP MLA Shikha Roy to come out with an explanation at a press conference.

The controversy erupted after a video was circulated, showing a member of "saffron brigade" making a case before the fish sellers for the shutdown of shops, citing a temple's closeness. Mahua Moitra, the Trinamool Congress MP from West Bengal, posted a series of statements on X, accusing BJP workers of threatening Bengali fish vendors. It may recalled that Trinamool Congress had supported the AAP in the last assembly polls and they are close allies in INDIAAlliance.

There is a possibility that the Delhi Police would work out the case, the video may be declared to be doctored and even some arrests made in the matter. However, in the

war of narratives, the BJP government has again been put on the defence. It's said that there is no smoke without fire. In the past few years, a large number of the BJP leaders have imbibed Uttar Pradesh chief minister Yogi Adityanath's aggressive Hinduvta posturing. While this posturing has helped the BJP consolidate its position in Uttar Pradesh, given Adityanath's ability to perpetuate the agenda and handle the fallout, it has created more headaches in the other states.

Before Delhi, we have the example of Maharashtra where from Aurangzeb the agenda meandered to bashing up of the non-Marathi speaking residents of the state. In Delhi too, the BJP legislator from Patparganj, Ravi Negi went hammer and tongs on closing the meat shops during the Navratras.

His idea may have been to target the Muslim population in his constituency, which doesn't vote for him. The question is, can a ruling party MLA of a mega polis like Delhi afford to have such myopic vision. The BJP must realise that among its political rivals pan India, in Delhi it has a party in opposition which has a reputation of being stronger in creating narratives than the ruling party.

Delhi set to enforce fuel ban on overage vehicles by April-end

NEW DELHI. The Delhi government is just weeks away from enforcing its long-planned policy to deny fuel to overage vehicles—a move aimed at tackling the capital's persistent air pollution. Of the city's 500 fuel stations, 477 are now equipped with systems to detect vehicle age, leaving just 23 installations before full implementation.

The policy, which bars petrol vehicles older than 15 years and diesel vehicles older than 10 years from being refuelled, was initially scheduled to come into effect on April 1. However, delays in the installation of Automatic Number Plate Recognition (ANPR) cameras at all fuel stations pushed back the launch. Now, officials say the system is nearly ready. "We have completed device installation at 477 fuel refilling stations, with only 23 remaining. Chief Minister Rekha Gupta and Environment Minister Manjinder Singh Sirsa are closely monitoring the progress. A full rollout will take place by the end of this month," a senior environment department official said.

So far, ANPR detection systems have been installed at 372 petrol pumps and 105 CNG stations across Delhi. The remaining 23 stations are expected to be covered within the next 10 to 15 days. The government aims to enforce the policy citywide by the end of April. To implement the ban, ANPR cameras are being used to scan vehicle number plates and retrieve registration data to determine the vehicle's age.

These systems will also verify whether the vehicle holds a valid Pollution Under Control (PUC) certificate. If a vehicle is identified as overage or non-compliant, an alert will be sent to fuel station staff, who will then deny refuelling. "Our goal is total enforcement. We don't want a situation where the system works at some pumps and not at others. Once every station is ready, we will launch the initiative across the city," Sirsa had said earlier.

Video: DU college principal coats classroom with cow dung for 'research'



NEW DELHI. The principal of Delhi University's Laxmibai College has been caught on video coating the walls of a classroom with cow dung. The Principal Pratyush Vatsala told PTI that the act was part of an ongoing research project being undertaken by a faculty member. "It is under process. I will be able to share details of the full research after a week. The research is being carried out in porta cabins. I coated one of them myself because there's no harm in touching natural mud. Some people are spreading misinformation without knowing the full details," she said.

She reportedly shared the video herself in the college's teachers' group, noting that indigenous methods are being adopted to cool classrooms in C Block.

"Those who have classes here will soon get these rooms in a new look. Efforts are being made to make your teaching experience pleasant," she wrote in the message. Established in 1965, and named after Rani Lakshmbai of Jhansi, the college is located in Ashok Vihar and operates under the Delhi government. The college comprises five blocks, with the recent initiative focused on one of them.

"Quite Bizarre": UP Cop Hunts For Judge Instead Of Accused In Huge Mix-Up

New Delhi. In a bizarre mix-up, a policeman in Uttar Pradesh's Firozabad launched a hunt for a judge after writing down her name in place of the accused man on the proclamation order in a theft case.

The mix-up emerged last month when sub-inspector Banwarilal, who was assigned to serve a court notice to theft suspect Rajkumar, informed the chief judicial magistrate, Nagma Khan, that the accused "Nagma Khan" could not be found at her home despite a "thorough search". "When the attached NBW (non-bailable warrant) was served by me, then a thorough search was done at the mentioned address of Nagma Khan, and no accused of this name lives at the said address. Therefore, you are requested to please pass



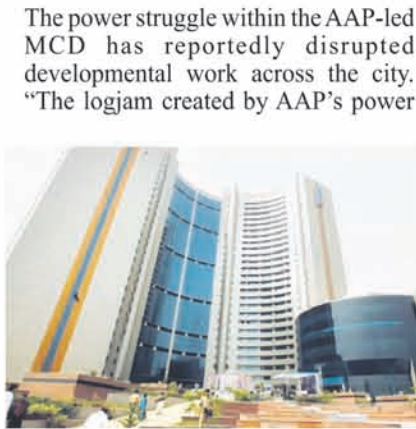
further orders," he told the court. In her March 24 order, Magistrate Khan said it was "quite bizarre" that Banwarilal had "little to no idea of what was sent by this court, who exactly sent it and against whom". "Without giving an inch of attention to the process, he first carelessly mentions the proclamation as an NBW and he then just wrote the name of the presiding officer quite blindly," she said.

"The serving officer of the concerned Police Station who was supposed to comply with the proclamation issued under section 82 CrPC seems to have been lacking basic knowledge of what was asked in the proclamation on his part. It seems he has not even read it properly. Such patent and grave error on his part reflects poorly on his working as a police officer as he knows nothing of the duties enjoined on him," the judge added.

Some AAP councillors may vote for BJP in MCD polls

NEW DELHI. The Bharatiya Janata Party (BJP) is set to form a "triple-engine" government in Delhi by securing a win in the upcoming Municipal Corporation of Delhi (MCD) mayoral elections, scheduled for April 25. In a major political development, sources have claimed that nearly 15 to 25 AAP councillors could vote in favour of BJP candidates for the posts of Mayor and Deputy Mayor.

This potential defection is possible due to the non-applicability of the Anti-Defection Law in the MCD. Discontent among AAP councillors has reportedly grown due to anti-incumbency in their wards and the failure to constitute the Standing Committee and other key civic bodies since AAP's victory in the 2022 MCD polls.



The power struggle within the AAP-led MCD has reportedly disrupted developmental work across the city. "The logjam created by AAP's power tussles has affected the delivery of civic services. Without the Standing Committee—which controls the finances—MCD operations have come to a standstill. Frustrated with the lack of development and unable to face their constituents, several AAP councillors are now in touch with the BJP and considering switching sides," a senior BJP leader, on the condition of anonymity said.

The Congress party, which had

previously supported AAP candidates during the first mayoral polls, has decided to contest independently this time. The Congress has already announced candidates for all 12 vacant wards, signalling a three-way contest.

The 250-member MCD currently has 238 active councillors, with 12 seats vacant due to recent victories in the Lok Sabha and Delhi Assembly elections. Among the 12, 11 councillors became MLAs and one seat fell vacant after BJP's Kamaljeet Schrawat won the Dwarka Lok Sabha seat in 2024. By-elections for these seats will take place only after the mayoral polls.

In the 2022 MCD elections, AAP had won 134 seats, BJP 104, Congress 9, and Independents 3. AAP's Shelly Oberoi won the first mayoral poll by a margin of 35 votes, while Mahesh Khichi narrowly won the third mayoral election in November 2024 by just 3 votes. However, AAP has seen a sharp decline in support, and many councillors feel the party has lost control of the MCD.

Groundwater extraction through illegal borewells no less than 'sin': Delhi High Court

NEW DELHI. The High Court has likened the rampant extraction of groundwater through unauthorised borewells to a "sin and warned of strict action against those who deplete groundwater. The judges noted that if this practice continues unchecked, Delhi could face a severe water crisis similar to that experienced in Johannesburg several years ago.

Chief Justice D.K. Upadhyaya and Justice Tushar Rao Gedela raised the alarm by asking, "Do you want Delhi to become like Johannesburg, where there was no water for months?" The remarks came during a public interest petition filed by advocate Sunil Kumar Sharma. Sharma claimed that several illegal submersible pumps had been installed at an under-



construction building on Goenka Road in the Roshanara area.

The court expressed serious concern about Delhi's falling water table and pointed out that illegal borewells are rapidly reducing groundwater levels. The judges also questioned how borewells for construction activities could have been allowed to operate at all. The petition revealed conflicting information: while the Municipal Corporation of Delhi reported six illegal borewells at the site, the Sub-

Divisional Magistrate of Daryaganj confirmed only three had been sealed.

To resolve these differences and assess the damage, the court ordered a joint survey of the property. Senior officials from the MCD, Delhi Jal Board (DJB), and the local police are to inspect the site within ten days and submit a detailed report. The bench made it clear that if active illegal borewells are found, the property owner could face environmental penalties.

According to Sharma, the construction project involves around 100 residential units. He warned that the unauthorised borewells not only threaten local water supplies but also contribute to environmental damage. Despite repeated requests to authorities, no significant action has been taken so far. The case is set for a further hearing on July 30.

Delhi government lines up flyovers, underpasses to ease city traffic snarls

Meanwhile, Andheria Mor handles traffic heading to Indira Gandhi International Airport, Gurugram, and the Qutub Minar area.

NEW DELHI. To ease traffic flow in the national capital, the Delhi government is planning to construct new flyovers and underpasses. The flyovers include connecting Adchini to Lado Sarai, a flyover at Metcalf House near Chandgi Ram Akhada, the doubling of the Savitri flyover and underpasses at Peera Garhi

and Andheria Mor. According to the initial plan, the PWD proposed a new flyover in Delhi to connect Adchini to Lado Sarai. This project is part of a broader effort to ease congestion on Aurobindo Marg and will involve an elevated corridor and underpasses. The elevated section will be 3 kilometres long and six lanes wide, running from Mother's International School to Mehrauli Archaeological Park.

The Expenditure and Finance Committee (EFC) of Delhi government is set to meet on Tuesday to decide the projects. If EFC approves the plans, detailed project reports will be prepared. After that, Cabinet approval is required. Once the Cabinet gives its approval, tenders will be invited, sources said.



Another PWD project aims to double the one-way Savitri Cinema flyover along the Outer Ring Road in South Delhi. Once completed, the expanded flyover will help ease traffic around Chittaranjan Park, Greater Kailash, and Nehru Place. The PWD also plans to build underpasses at two of Delhi's busiest

junctions—Peeragarhi Chowk in West Delhi and Andheria Mor in South Delhi. Peeragarhi Chowk is a major intersection on the Outer Ring Road and a significant traffic bottleneck, handling vehicles moving between North and West Delhi, as well as commercial traffic from industrial areas.

Meanwhile, Andheria Mor handles traffic heading to Indira Gandhi International Airport, Gurugram, and the Qutub Minar area. "There have been attempts to decongest Andheria Mor in the past, but none have had lasting success. Anti-encroachment drives are periodically carried out, but their impact is short-term. A proper design solution is needed," sources said. Another PWD project involves the construction of a 680-metre, six-lane flyover at Metcalf House T-junction in North Delhi.

NEWS BOX

Pet pitbull kills infant in US, mother says will never understand why

world. A seven-month-old infant was killed by one of her family's three pit bulls in US's Ohio, according to her parents. The mother of the baby, Elizah, posted photos of her daughter cuddling with the dogs on Facebook wrote, "I will never understand why!" Police said Eliza was bitten by one of the family's dogs and that the situation escalated quickly. It was unclear which of the family's three pitbulls bit the infant, The New York Post reported.Mackenzie Copley, the victim's mother, said she was "lost and broken" about her daughter's shocking demise. "This was the same dog who was side by side with my baby every single day," she said.Eliza's father, Kameron Turner, expressed his grief and said that "life was not so fair". "How can I continue living without her," he said."Elizah's face would light up the room and her laugh was contagious," her obituary read. Franklin County Animal Control took the three dogs following the incident and will decide what happened to them after an investigation, according to The New York Post.Calling it a tragic incident, Columbus Police Sergeant James Fuqua said, "There is really not a lot of words I can say to convey how I feel."

New extremist group claims responsibility for bombing near Greek railway company in Athens

world. A new extremist group claimed responsibility Sunday for a bomb that exploded near the offices of Hellenic Train, Greece's main railway services operator and the planting of another near the Labor Ministry in early February.The explosion Friday evening resulted in limited damage and no injuries. The perpetrators had forewarned of the explosion by calling two media organizations about 40 minutes before it happened.In a lengthy posting on the website Athens.indymedia.org on Sunday, the perpetrators, who styled themselves the Revolutionary Class Struggle, explained the reasons for their action, which they said was part of an armed struggle against the state.Revolutionary Class Struggle dedicated the bombings to "the Palestinian people and their heroic resistance" and paid tribute to Kyriakos Xymitiris, a man who was killed last year when the explosive device he was assembling exploded in a central Athens apartment.The explosion also came during widespread public anger over a 2023 railway disaster, Greece's worst, in which 57 people were killed and dozens more injured when a freight train and a passenger train heading in opposite directions were accidentally put on the same track. The deadly accident exposed severe deficiencies in Greece's railway system, including in safety systems, and has triggered mass protests led by relatives of the victims against the country's conservative government on the occasion of the accident's second anniversary.

Mario Vargas Llosa, Peruvian author and Nobel literature laureate, dies at 89

LIMA, Peru: Peruvian author Mario Vargas Llosa, Nobel literature laureate and a giant of Latin American letters for many decades, has died, his son said Sunday. He was 89."It is with deep sorrow that we announce that our father, Mario Vargas Llosa, passed away peacefully in Lima today, surrounded by his family," read a letter signed by his children Álvaro, Gonzalo and Morgana, and posted by Álvaro on X. The letter says that his remains will be cremated and that there won't be any public ceremony."His departure will sadden his relatives, his friends and his readers around the world, but we hope that they will find comfort, as we do, in the fact that he enjoyed a long, adventurous and fruitful life, and leaves behind him a body of work that will outlive him," they added. He was author of such celebrated novels as "The Time of the Hero" (La Ciudad y los Perros) and "Feast of the Goat."A prolific novelist and essayist and winner of myriad prizes, Vargas Llosa was awarded the Nobel in 2010 after being considered a contender for many years.Vargas Llosa published his first collection of stories "The Cubs and Other Stories" (Los Jefes) in 1959. But he burst onto the literary stage in 1963 with his groundbreaking debut novel "The Time of the Hero," a book that drew on his experiences at a Peruvian military academy and angered the country's military. A thousand copies of the novel were burned by military authorities, with some generals calling the book false and Vargas Llosa a communist.That, and subsequent novels such as "Conversation in the Cathedral," (Conversación en la Catedral) in 1969, quickly established Vargas Llosa as one of the leaders of the so-called "Boom," or new wave of Latin American writers of the 1960s and 1970s, alongside Gabriel García Márquez and Carlos Fuentes.Vargas Llosa started writing early, and at 15 was a part-time crime reporter for La Crónica newspaper. According to his official website, other jobs he had included revising names on cemetery tombs in Peru, working as a teacher in the Berlitz school in Paris and briefly on the Spanish desk at Agence France-Presse in Paris.He continued publishing articles in the press for most of his life, most notably in a twice-monthly political opinion column titled "Piedra de Toque" (Touchstones) that was printed in several newspapers.Vargas Llosa came to be a fierce defender of personal and economic liberties, gradually edging away from his communism-linked past, and regularly attacked Latin American leftist leaders he viewed as dictators. Although an early supporter of the Cuban revolution led by Fidel Castro, he later grew disillusioned and denounced Castro's Cuba. By 1980, he said he no longer believed in socialism as a solution for developing nations.

34 killed, 117 injured after Russian missiles hit Ukraine amid peace talks

Russian ballistic missiles hit Ukraine's Sumy
Russia denies targeting civilians
Zelenskyy urges Trump to visit Ukraine, calls for peacekeeping forces.

Sumy. Two Russian ballistic missiles slammed into the heart of the northern Ukrainian city of Sumy on Sunday, killing 34 people and wounding 117 in the deadliest strike in Ukraine this year, officials said.President Volodymyr Zelenskyy demanded a tough international response against Moscow over the attack, which came with US President Donald Trump's push to rapidly end the war struggling to make a breakthrough.Dead bodies were strewn on the ground in the middle of a city street near a destroyed bus and burnt-out cars in a video posted by

Zelenskyy on social media."Only scoundrels can act like this, taking the lives of ordinary people," he said, noting that the attack had come on Palm Sunday when some people were going to church."You know, the people who are fighting against us always say that they are Orthodox (Christian) believers, that they believe in God, but we have experienced first-hand terrorism today. I have no words," said 27-year-old PhD student Yevhen, a local resident who declined to give his surname.The leaders of Britain, Germany and Italy condemned the attack."These attacks show just what Russia's supposed readiness for peace is worth," German Chancellor Olaf Scholz wrote on social media.US Secretary of State Marco Rubio in a statement expressed condolences for the victims and said the attack was a "tragic reminder of why President Trump and his Administration are putting so much time and effort into trying to end this war."Zelenskyy, in an interview with CBS News' "60 Minutes" aired on Sunday, urged



Trump to visit Ukraine."Please come to see people, civilians, warriors, hospitals, churches, children, destroyed or dead," Zelenskyy said in a video clip the program posted on social media.During the interview, which took place on Friday, Zelenskyy was asked if the United States had Ukraine's back.After a brief pause, Zelenskyy replied: "Even in this pause of mine, there's a problem, because I want to answer truthfully and quickly that the United States is our strategic, strong partner," he said. "But the pause is doubt. I don't doubt that the people of America are

with us, but in a long war, many details are forgotten."He called on the United States to provide forces as part of an international peacekeeping effort, specifically asking for Washington to help protect Ukrainian airspace with aircraft.Under Trump's administration, US officials have held separate rounds of talks with Kremlin and Kyiv officials to try to move toward a cessation of hostilities in Ukraine.Russian authorities did not immediately respond to a Reuters request for comment. Russia denies targeting civilians, but thousands have been killed and injured in its invasion of Ukraine.A separate Russian drone attack injured five people in the Black Sea port city of Odesa late on Sunday and damaged a medical facility, regional officials said. The Sunday attacks followed a missile strike in the central Ukrainian city of Kryvyi Rih, Zelenskyy's hometown and far from the ground war's front lines in the east and south, this month that killed 20 people, including nine children.

Brazil's Bolsonaro recovering after 12-Hour surgery, wife expresses gratitude

UPDATED Former Brazilian President Jair Bolsonaro is recovering after undergoing surgery on Sunday, his fifth since being stabbed in the stomach while campaigning in 2018, his wife, Michelle, said in a social media post."Surgery concluded with success," she posted. "My heart overflows with gratefulness for each one of you who have been praying." The procedure started at 8:30 a.m. local time (1130 GMT) and was scheduled to last six hours, but went on for about 12 hours because of the complexity of the surgery.The medical team said in a report that the procedure went well and that the former president was stable, without pain, and was in the hospital's intensive care unit.Doctors for the far-right leader are expected to talk to reporters on Monday morning, the hospital's press office said.Bolsonaro, 70, was hospitalized on Friday after feeling strong abdominal pain during an event with supporters in northeastern Brazil, forcing him to break off a regional tour

aimed at drumming up political support. He was transferred to the nation's capital, Brasilia, where he lives, on Saturday night.Bolsonaro, a



hard-right former army captain who served as president from 2019 to 2022, has been campaigning around Brazil for Congress to pass an amnesty bill for his supporters who stormed the capital after he lost the 2022 election.In a message to allies before the surgery, he criticized the potential for a supporter to be sentenced to 10 years in prison, and again called for Congress to pass the amnesty bill."May God enlighten

each of the 513 representatives and 81 senators in their votes," he wrote. "If with our decisions we pave our eternity, this vote carries a significant weight." Brazil's Supreme Court in March ruled that Bolsonaro should stand trial over accusations that he conspired to overthrow the government after his 2022 electoral defeat. He has denied any wrongdoing and called the trial an example of left-wing "lawfare" targeting conservative leaders such as himself and France's Marine Le Pen. Bolsonaro has already been banned from running for office until 2030 for discrediting the country's voting system. If the Supreme Court finds him guilty, he could face a long prison sentence.Even so, he insists that he will run in next year's presidential election, casting himself as the best candidate to take on leftist President Luiz Inacio Lula da Silva, whose popularity has slipped amid high inflation.

New Jersey restaurant owner faces deportation after spying for Chinese government

UPDATED. Ming Xi Zhang, a 61-year-old Chinese citizen, and New Jersey restaurant owner, is in the custody of US Immigration and Customs Enforcement (ICE) and may be deported. He was previously convicted of working as an unregistered agent for the Chinese government.Zhang, who owns Ya Ya Noodles in Montgomery Township and is widely known locally as "Sushi John," was arrested on March 24 in Newark. He legally entered the US in June 2000 through Los Angeles International Airport, but officials say he later violated the conditions of his stay.In 2021, Zhang pleaded guilty to operating as an agent for the Chinese government without registering with the US Attorney General — a violation of the Foreign Agents Registration Act (FARA).Federal prosecutors say Zhang secretly met with Chinese intelligence officers in the Bahamas in 2016 and subsequently delivered USD 35,000 to an individual in New Jersey. He also hosted a Chinese operative at his home near Princeton on two separate occasions.



remain sealed, leaving some of Zhang's activities unclear. However, his plea agreement resulted in a sentence of three years' probation and a \$10,000 fine, handed down on April 30, 2024.He had been released on a \$150,000 bond following his guilty plea in 2021, with the condition that he could face removal from the U.S.ICE officials say his espionage-related activities make him a national security threat. "Any illegal alien conducting activities related to espionage, sabotage or export control against the United States is subject to deportation," said ICE Newark Field Office Director John Tsoukaris. Zhang is currently being held at the Elizabeth Detention Center while awaiting further immigration

Chinese national Zhang faces deportation from US
He pleaded guilty to being an unregistered Chinese agent
Zhang met with Chinese intelligence, delivered \$35,000

proceedings.Despite the gravity of the charges, his restaurant remains open and continues to receive support from the local community. "The whole town has been really supportive," a staff member told The New York Post. "Everyone's been coming in, offering phone numbers, talking to his family."Zhang's case comes amid a broader push by U.S. authorities to crack down on foreign influence operations and reinforce national security. In recent years, concerns have grown over Chinese nationals allegedly attempting to access sensitive US locations.

8 Pak workers killed after Baloch militants open fire at car workshop in Iran

Islamabad Eight Pakistani workers were killed by Baloch militants who stormed a car repair workshop and opened fire after tying up the victims in Iran's Sistan-Baluchestan province, officials said on Sunday.All eight workers hailed from several areas of Punjab, the state-run Associated Press of Pakistan reported.It said that the armed men barged into the workshop sometime on Saturday night in a village in the Mehariestan district and, after tying the workers' hands and feet, opened indiscriminate firing and killed them. Later, the attackers fled from the site.A spokesman for the banned Balochistan National Army (BNA) claimed responsibility for the killing of eight Pakistanis.The incident prompted Islamabad to demand "full cooperation" from Tehran in investigating these "inhumane and cowardly" murders. "Pakistan strongly condemns the inhumane

and cowardly killing of its nationals in Iran. We hope for the Iranian side's full cooperation in investigating the matter and in timely repatriation of victims' remains," the Foreign Office here said in a statement. It said that Pakistani officials in Iran were in "constant touch" with the authorities there for a probe into the incident and the repatriation of bodies.All the eight Pakistanis who were killed belonged to Bahawalpur city in southern Punjab, the Iranian officials said, adding that they were staying at the workshop where they used to dent, polish, paint and repair cars.Iranian authorities have said that the Iranian police were investigating the incident. Prime Minister Shehbaz Sharif has expressed deep sorrow, calling the attack a brutal act of terrorism. He urged Iran to arrest the perpetrators, ensure their swift punishment, and disclose the motive.



"Combating this ominous phenomenon requires collective and joint efforts by all countries," Iran's Ambassador to Pakistan, Reza Amiri Moghadam, said while denouncing the killings. He termed terrorism a shared threat to regional security.It was the second such incident in the Sistan Baluchestan. In January of last year, armed men killed nine Pakistanis in Saravan city who were also working in Iran as motor mechanics and staying at a

workshop.Local groups in Pakistan and Iran are part of a decades-long struggle for greater autonomy in Balochistan. Last year, in January, Iran attacked militants inside Pakistan. Pakistan retaliated with a missile strike inside Iranian territory, escalating border tensions.Iran claimed it was targeting Jaish al-Adl, a militant group active against Iran, while Pakistan said it was aiming at the "hideouts" of two militant groups inside Iran, the Balochistan Liberation Army (BLA) and the Balochistan Liberation Front (BLF).Pakistan's Balochistan has long grappled with insurgency and unrest. Locals, particularly the Balochs, have blamed governments for exploiting and profiting from Balochistan's resources while neglecting the development of the region itself.

NEWS BOX

Virat Kohli gets pranked by RCB teammates after win vs Rajasthan

New Delhi Royal Challengers Bengaluru players pranked Virat Kohli after their win against Rajasthan Royals in Jaipur. RCB's Tim David hid one of Virat Kohli's bats in his own kit and waited for the legendary batter to figure out what had happened. When Kohli came into the dressing room, he immediately noticed that he had only six bats in his kit bag and one was missing. Kohli asked around if anyone had seen his bat, but the rest of the team - including the coaches - refused to divulge any details. A slightly agitated Kohli started looking around the dressing room and finally found his bat hidden inside Tim David's kit. When Kohli went to confront David about it, the Australian batter hilariously said that he had only borrowed the bat. Later in the video, David revealed that Kohli had no clue where his bat was and, in fact, wasn't too concerned about finding it, as he had just scored a terrific fifty against Rajasthan. Dressing room banter on point. What did Tim David take from Virat's bag? Let's find out. [??#PlayBold #????RCB #IPL2025 pic.twitter.com/j9dIP1p2Np](#)— Royal Challengers Bengaluru (@RCBTweets) April 14, 2025

IPL 2025: RR vs RCB Highlights | Match Report
On Sunday, Royal Challengers Bengaluru thumped Rajasthan Royals by 9 wickets at the Sawai Man Singh Stadium in Jaipur. RCB bowlers set up the win for the visiting



side with some exceptional bowling performance in the first innings of the match. Chasing a target of 174 runs, Phil Salt came out aggressively against Rajasthan to set up the chase. Virat Kohli grafted the innings beautifully for RCB and hit yet another half-century in the ongoing edition of the IPL. Kohli scored his 3rd fifty of the season, taking his run tally to 248 from 6 matches. He is firmly in place for the Orange Cap race and is currently in the 5th spot behind Nicholas Pooran (349), Sai Sudharsan (329), Mitchell Marsh (265) and Shreyas Iyer (250).

DC vs MI: Karun Nair logs back into IPL, seamlessly syncs with new-age T20 game

New Delhi . Karun Nair made his IPL debut in 2013, but the past 12 years have been a rollercoaster for him. He has played for four different teams, yet hasn't been able to secure a permanent spot in any squad. In IPL 2023 and 2024, Nair didn't play a single game, which seemed to signal the end of his IPL career. However, rather than giving up, Nair continued to work hard, determined not to accept that his IPL journey was over. In 2024, he made a strong statement with his bat across formats, especially during his campaign for Vidarbha in the Vijay Hazare Trophy. This performance brought him back



into the spotlight, not only for a potential IPL return but also for a place in the Indian team. On Sunday, Nair proved that his top-level cricket career is far from finished. Although his team lost, Nair stole the show with an explosive 89 off 40 balls, including 12 fours and five sixes. It took a special delivery from Mitchell Santner to dismiss him against the run of play. After Nair's departure, DC lost their momentum and were bowled out for 193 in 19 overs. Reflecting on his return to the IPL after three years, Nair shared that he patiently waited for his chance during his time away. Instead of dwelling on his past setbacks, he focused on staying ready to seize any opportunity that came his way. "Well, honestly, I felt confident. I felt I was well prepared to play in the IPL if given the opportunity. I've been preparing all season and waiting for my chance. It was all about being ready, and I respect the management's decision to pick the playing eleven. I have always followed the process of preparation, and for me, it's about being ready and performing for the team," Nair said in the post-match press conference. Runs and more runs! In the Vijay Hazare Trophy, India's premier one-day competition, Nair scored 779 runs in nine matches, averaging an incredible 389.50. tion last year.

Carlos Alcaraz cuts gap on Jannik Sinner in ATP Rankings, climbs to World No. 2 after Monte Carlo title

New Delhi Carlos Alcaraz had an outstanding start to his clay-court season last week, clinching the Monte Carlo title on Sunday for the first time in his career. After missing this Masters 1000 event last year, he earned the full 1,000 ranking points when he beat Lorenzo Musetti in the final, elevating his total from 6,720 to 7,720 points. Go Beyond The Boundary with our YouTube channel. SUBSCRIBE NOW!

As a result, Alcaraz moves one place in the latest ATP rankings (April 4), moving up from No. 3 to No. 2, surpassing Alexander Zverev, who lost his first match in Monte Carlo this year. Zverev's ranking points drop from 7,645 to 7,595, causing him to fall one place. This marks Alcaraz's first return to the Top 2 since October 28 last year, when he was also ranked No. 2; he had spent 23 consecutive weeks at No. 3 since then. Overall, this is his 89th week in the Top 2, with 36 weeks at No. 1 and 53 weeks at No. 2. Alcaraz also narrows the gap between him and current No. 1 Jannik Sinner, who is suspended presently, from 3,610 points (10,330 to 6,720) to 2,210 points (9,930 to 7,720). Sinner missed Monte Carlo while defending semi-final points as he serves a three-month suspension for two failed dope tests last year. Although Alcaraz can't overtake him before Sinner returns on the tour in Rome, winning both Barcelona and

Madrid in the coming weeks could reduce that gap to just 720 points, putting the No. 1 ranking within reach in Italy.

In addition to Alcaraz and Zverev's place swap, there was movement elsewhere in the ATP Top 10: Alex de Minaur made the biggest jump, climbing from No. 10 to No. 7 — just one spot shy of his career-high of No. 6 — after reaching the semifinals of his second Masters 1000 event. Andrey Rublev also rose from No. 9 back to No. 8, while Daniil Medvedev returned to the Top 10 after being outside for two weeks, moving from No. 11 to No. 9. This marked the 2021 US Open champion's first absence from the elite group in over two years, dating back to February 2023.

Meanwhile, Musetti closed in on a Top 10 debut, climbing from No. 16 to No. 11 — surpassing his previous career - high of No. 15 — after reaching the finals of his first Masters 1000 event. He's now just 15 points behind the No. 10-ranked Ruud, with scores of 3,215 to 3,200. "I'm just really happy to have won Monte Carlo for the first time," Alcaraz said. "It's been a really difficult week with a lot of difficult situations. I'm really proud of myself, how

I've dealt with everything. It's been a really difficult month for me on the court and outside. Coming here and seeing how the whole hard work has paid off, I'm really



happy." This victory represents Alcaraz's first clay court success since his French Open triumph last season, with his only other clay court appearance resulting in a silver medal at the Paris Olympics. Musetti, appearing in his first Masters 1000 final after defeating top 10 players Stefanos Tsitsipas and Alex de Minaur, started strongly but faced physical challenges as the

match progressed. The Italian received medical treatment for his right leg when trailing 0-3 in the final set, though he continued to play despite the injury.

"It is not the way I would have wanted to win a match," Alcaraz said. "Lorenzo's been through a really tough week, long and intense matches. I feel sorry for him, one of the best results he has done. To end like this is not easy. Hopefully it's not serious and he's 100 percent soon." It was probably one of my best tournaments so far," Musetti said, who won bronze at last year's Olympics behind Alcaraz and gold medalist Novak Djokovic. "I'm disappointed I couldn't finish the match in the best way, for the crowd. You deserve it so I will keep going and try and come back for revenge." The match began with Musetti dropping his opening service game but immediately breaking back and taking the first set, capitalising on Alcaraz's six unforced errors. Alcaraz's game improved significantly in the second set, which he won convincingly before completing the victory with a dominant final set. Both players will continue their clay court preparations at the Barcelona Open next week as they build toward the French Open at the end of May.

The Masters 2025: Rory McIlroy wins at Augusta National, completes career Grand Slam

New Delhi Rory McIlroy secured his first Masters victory and completed golf's career Grand Slam on Sunday at Augusta National, defeating Justin Rose in a sudden-death playoff with a four-foot birdie putt. The world number two from Northern Ireland overcame multiple setbacks during the final round, including squandering the solo lead three times, to join the elite group of players who have won all four major championships.

McIlroy's historic triumph came after 17 attempts at the Masters, making him the sixth golfer alongside Jack Nicklaus, Tiger Woods, Gary Player, Gene Sarazen, and Ben Hogan to achieve the career Grand Slam. Go Beyond The Boundary with our YouTube channel. SUBSCRIBE NOW!

"It feels incredible. This is my 17th time here. I was wondering if it would ever be my time. I'm thrilled and so proud to be able to call myself a Masters champion," McIlroy said. The victory earned McIlroy a record \$4.2 million prize from the tournament's \$21 million purse, along with the coveted green jacket. "The last 10 years coming here with the burden of the Grand Slam on my

shoulders and trying to achieve that, I'm sort of wondering what we're all going to talk about going into next year's Masters," McIlroy reflected. The dramatic finale



unfolded when McIlroy needed a par on the 72nd hole to win but hit his approach into a greenside bunker and missed a five-foot par putt, forcing a playoff with Rose at 11-under 277. "My battle today was with myself. How I responded to setbacks, that's what I'll take from this week," McIlroy stated. In the playoff, Rose's approach landed 15 feet

from the hole, while McIlroy placed his shot within four feet. After Rose missed his birdie attempt, McIlroy made his putt to clinch the victory. "I've dreamed about that moment for as long as I can remember," McIlroy said. The emotional win triggered an outpouring of feelings as McIlroy dropped to his knees on the 18th green, crying and later embracing his caddy Harry Diamond, wife, and daughter while fans chanted his name. There was a lot of pent up emotion that came out on that 18th green. A moment like that makes all the years and all the close calls worth it," McIlroy shared. The 35-year-old's journey to victory included overcoming a double-bogey start that erased his initial two-shot lead, briefly falling behind Bryson DeChambeau before reclaiming the lead through two-shot swings on consecutive holes. "I would say it was 14 years in the making, from going out with a four-shot lead in 2011 and feeling I could have done something there," McIlroy recalled, referencing his previous Masters disappointment.

IPL 2025: Ayush Mhatre likely to join CSK, will link up with squad before MI game

New Delhi: Ayush Mhatre is likely to join the Chennai Super Kings camp for the remainder of the Indian Premier League (IPL). It has been reliably learnt by TimesofIndia.com that the 17-year-old opener will link up with the squad ahead of CSK's fixture against Mumbai Indians on April 20. As reported by TOI on April 3, Mhatre had been called up by the franchise for mid-season trials in Chepauk. He had gone unsold during the mega auction in Jeddah last year. Go Beyond The Boundary with our YouTube channel. SUBSCRIBE NOW! But with Ruturaj Gaikwad ruled out for the remainder of the season, Mhatre has thrown his candidature in the ring for the five-time champions. Gaikwad was ruled out of the rest of the IPL season with an elbow injury with MS Dhoni taking over the captaincy duties. CSK have had a disastrous season with one win from six matches and are sitting bottom of the points table. The injury to Gaikwad was confirmed by CSK

head coach Stephen Fleming on the eve of their eventual loss to Kolkata Knight Riders. The 28-year-old picked up the injury during CSK's match against Rajasthan Royals in



Guwahati on March 30. He was struck on his elbow when charging to a Tushar Deshpande delivery, but continued batting and scored 63 in that game. Gaikwad played

two more matches after that, scoring 5 and 1 against Delhi Capitals and Punjab Kings, respectively. With the regular CSK captain out of contention, the Chennai management have seemingly shifted focus towards Mhatre as an injury replacement. Mhatre had earlier joined the CSK camp in Chennai from Rajkot, where he was part of BCCI's National Cricket Academy's zonal camp for Under-19 cricketers. "Yes, we've called him for trials. He has impressed our talent scouts," CSK MD & CEO Kasi Viswanathan had told TOI. The youngster had a fine debut season for Mumbai in 2024-25, scoring 458 runs in seven matches @ 65.42, with two hundreds and one fifty in the Vijay Hazare Trophy, and 471 runs in eight matches @ 33.64 with two centuries and one fifty, with top score of 176 against Maharashtra in the Ranji Trophy.



match. "They were cruising at 10-11 runs per over. So it was important for Santner and me to chip in with crucial wickets," Karn Sharma told the media after the match.

"The change of ball can be termed as the game-changing moment. The old ball was getting wet due to dew. The new ball gives you that 'purchase' from the wicket, which Santner and I were able to extract," he added. "DC were on the front foot in the run chase. We were a bit under pressure until Karun Nair's wicket, after which 2-3 wickets fell in quick succession. Thereafter, KL Rahul got dismissed and we were right back in the game. He [KL Rahul] performed well in the previous match [vs RCB], so his wicket was pivotal," the spinner concluded. This was Mumbai's first win away from home and their second win overall in the competition. The team executed three back-to-back run-outs in the final overs of the Delhi innings to win the match by 12 runs. Mumbai are currently in 7th spot in the league table with 4 points from 6 matches.

IPL 2025: Karn Sharma Overshadows Karun Nair As Mumbai Indians Beat Delhi Capitals By 12 Runs

Mumbai Indians' 'forever captain' Rohit Sharma's tactical call was executed to perfection by 'Impact Substitute' Karn Sharma as they made a comeback for the ages with a 12-run victory over Delhi Capitals here on Sunday to bring their IPL campaign back on track. Chasing a target of 206, Karun Nair's brilliant 40-ball-89 went in vain as Delhi Capitals, who were cruising along at 119 for one just after the halfway stage, ended on 193 in 19 overs after an eventful penultimate over which saw three run outs and two boundaries. Rohit, the tactician par excellence, indicated to his coach Mahela Jayawardene to bring in Karn and also asked for a ball change after the 11th over. And suddenly the ball started to grip and turn with Mitchell Santner's dream delivery disturbing Nair's off-stick and Karn picking up three for 36 on a day ruled by wrist spinners. Once KL Rahul, not known for handling pressure situations on a slightly slowish track, was fooled by a classic leg-break by Karn, which lobbed up, the DC

batting started to crumble. In the end, MI's brilliant ground fielding showed its effect as three run outs ended Delhi Capitals' brilliant streak of wins. This is the kind of victory that lifts the spirit and Rohit's observation on the changing nature of the track and initiation of spinners on a day when Jasprit Bumrah was off-colour did the trick. For DC, Nair, one of India's only two Test triple centurions but who was down and out till the start of the 2024-25 domestic season, became the proverbial phoenix, rising from the ashes with stupendous performance on the day. The pick-up pull off Bumrah over square-leg and a lofted off-drive for six in the seventh over had stunned the bowler and two more sixes off MI skipper Hardik Pandya had the crowd yearning for more. ut Santner pitched one on middle stump, got it to turn away and squared up the batter, and it was certainly the game-changing moment as far as MI were concerned. Earlier, Kuldeep Yadav's artistry was well complemented by young leg-

spinner Vipraj Nigam's happy knack of



picking wickets before Tilak Varma's attractive half-century took Mumbai Indians to 205 for 5 in 20 overs. Tilak (59 off 33 balls) was the only MI batter to capitalise on a good start, hitting six fours and three sixes and making amends for his poor scores in some of the earlier games. Naman Dheer (38 not out off 17 balls) then used the long handle to prop up the total. On a track where stroke-

making wasn't very difficult, the two wrist spinners from Uttar Pradesh snared four wickets between them while giving away 64 runs in their eight overs, which could be termed as brilliant considering the conditions. The two spinners actually reduced the pace of their deliveries, allowing them to slightly grip off the surface and some of the MI batters perished while going for risky shots. Rohit's (18 off 12 balls) wretched IPL form continued as young Vipraj (2/41 in 4 overs) found him plumb in-front with a googly that he missed while trying to go for a slog sweep over the cow-corner. He now has 56 runs from five innings. For Vipraj, it is some kind of an achievement getting Virat Kohli and Rohit in back-to-back games. Rohit's opening partner Ryan Rickleton (41 off 25 balls) did show spark but the seasoned Kuldeep (2/23 in 4 overs) seemed to have tied a thread to the white Kookaburra, controlling its length like a yo-yo.



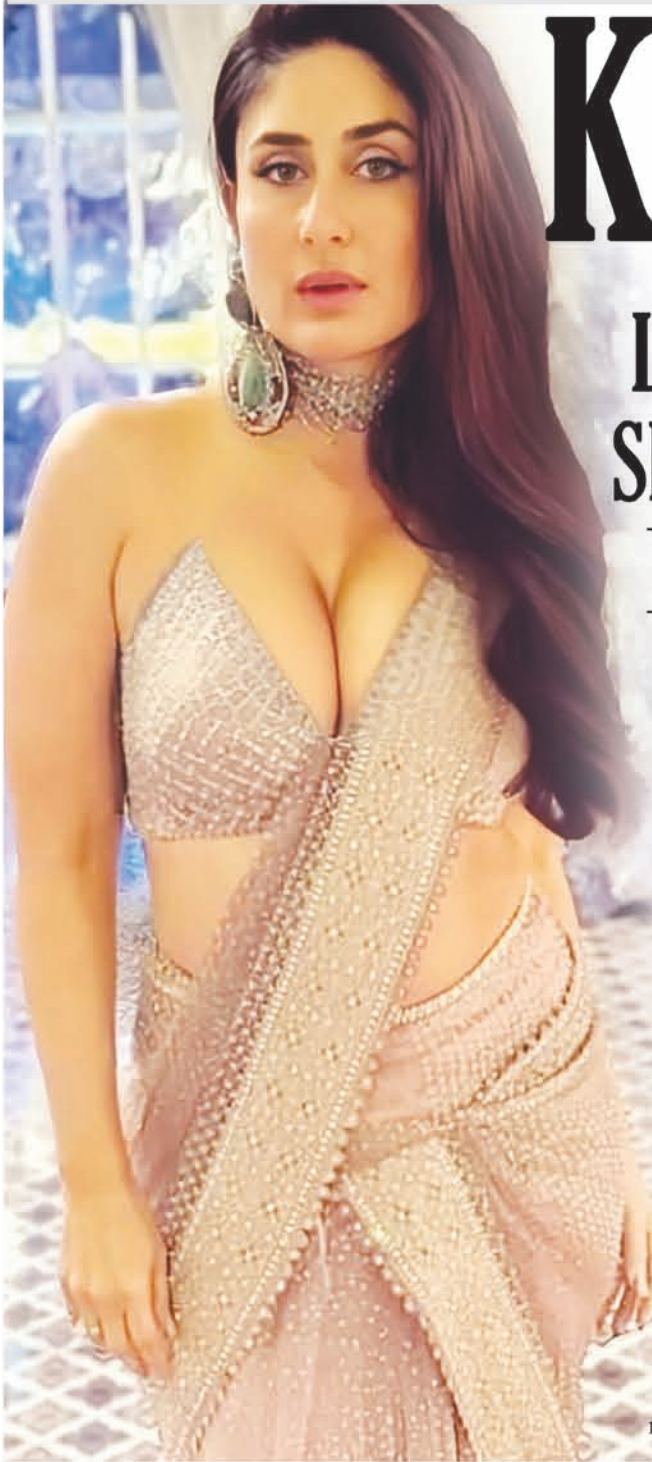
Paps Ask

Rakul Preet Singh

If She's A Part Of Race 4; Her Smile Drops BIG Hint

It is no secret that producer Ramesh Taurani is currently working on the fourth instalment of his Race franchise. While Saif Ali Khan has rejoined the film's cast, there have been several speculations about the film's leading lady and the antagonist. Reportedly, Rakul Preet Singh has been approached for the film. Just days after Taurani stated that only two actors were in consideration, Rakul's response to a paparazzo's question about Race 4 sparked speculations. Rakul Preet was clicked after walking the ramp at Bombay Fashion Week 2025. Once off-stage, a pap asked about her casting in Race 4. Though Rakul chose silence, she smiled coyly at the question and kept walking. While that may be a significant hint, don't be surprised if an official announcement soon follows.

Recently, Ramesh Taurani cleared that only two actors are being considered for Race 4 as of now. His team further urged everyone not to believe in false narratives about the film's casting. "We would like to clarify that we are currently in discussions only with Saif Ali Khan and Sidharth Malhotra for the next installment of the Race franchise (Race 4) which is currently in its scripting phase. No other male or female actors have been approached at this stage. We sincerely request the media and social media pages to avoid engaging with false news and to wait for an official confirmation from our PR team," the statement read. The announcement came in amid rumours of Sanam Teri Kasam fame Harshvardhan Rane being considered to play the antagonist in the film. Clarifying the rumours, Taurani told Hindustan Times, "No, this is fake news. He hasn't been roped in for the role, and nothing has been finalized yet." When asked about additional casting details beyond Saif, he added, "No cast has been finalised as of now, so I can't comment on any names."



Kareena Kapoor

Looks Elegant In Pastel Lehenga, Reveals She Is Day Dreaming About Kadhi Chawal

Kareena Kapoor Khan is called the fashion icon of Bollywood. She has often given us fashion goals, and once again, the actress shared a series of photos in pastel colour lehenga. In no time, it went viral. However, this time, it was her caption that grabbed our attention.

Taking to her Instagram handle, Kareena shared photos in which she is seen wearing a pastel green colour lehenga. To complete the look, the actress opted for subtle makeup. "Day dreaming about my kadhi chawal," read the caption. One of the fans wrote, "When decency speaks." Another wrote, "Just beautiful no one can touch her aura."

The actor was recently spotted at the Mumbai airport, and like all her airport looks, this OOTD was as stylish and comfortable as it could get. The actor opted for an all-blue ensemble and rocked the monochrome aesthetic like a pro. Viral videos



and photos from the airport show Kareena Kapoor exiting her car and making her way to the airport. The actor was accompanied by one staff member from her team. She smiled for the cameras before entering the airport. Her OOTD was all about comfort. She opted for a no-makeup look, and she looked as stunning as ever.

Recently, Kareena shared photos from her shoot alongside dashing snapshots of Saif horse-riding in a different city. With her signature wit, she called him "guilty" of his charm, playfully referencing their different locations and busy schedules. In the pictures shared on her Instagram, Kareena exuded boss energy in a violet shirt and matching trousers, complete with a police belt and sunglasses. Seated confidently on a sofa between takes, the actor looked every bit the stylish officer on duty. On the professional front, Kareena was last seen in the action drama film Singham Again, which was released in November last year. Helmed by Rohit Shetty, the film featured a stellar cast including Ajay Devgn, Deepika Padukone, Tiger Shroff, Arjun Kapoor, Ranveer Singh, Akshay Kumar and Jackie Shroff. She will reportedly be next seen in director Meghna Gulzar's upcoming drama film, tentatively titled Daayra. An official announcement of the film from the makers is still awaited.

Gautami Kapoor Holds 'No Grudge' Against Ekta Kapoor, Says She's 'Waiting' To Work With Her, Ram Kapoor



Ram Kapoor's wife Gautami Kapoor was recently seen at a fashion event, and during an interaction with the paparazzi, she was asked about her alleged rift with Ekta Kapoor. Gautami instantly replied that there is no grudge against Ekta, and that she believes in 'live and let live'. When asked whether she would want to collaborate with the producer and Ram Kapoor in the future, she said that she would love to work with both of them. For the unversed, Ekta had seemingly taken a dig at Ram after he denied undergoing Ozempic treatment for weight loss. In response, Gautami shared a video mimicking Ekta, which went viral on social media. A video shared by paparazzo Viral Bhayani shows Gautami Kapoor addressing the viral video, and reacting to whether she has had a fallout with Ekta Kapoor. She said, "I just believe that you should live and let live, and be happy and at peace. That's what matters at the end." When asked if she would like to collaborate with Ekta and Ram Kapoor in the future, she replied, "That'll be amazing! Ekta, Ram and me! Wow what a combination. I am waiting for that day. I would love to work with both of them."

When asked whether that means there is no grudge against Ekta, Gautami said, "Not at all. I am not a person who holds grudges. I'm here to be happy. Life is short, it's a short ride. We all have to enjoy." Check out the video below!

This isn't the first time that Gautami reacted to her viral video mimicking Ekta Kapoor. Earlier, in an interview with Vicky Lalwani, she said, "I have not done this with any kind of vengeance, or any kind of revenge or vested interest. Ye social media ne isko itna hype kar diya hai. Logon ke beech mein ab ye debate chal rahi hai. Maine is attitude se ye kiya hi nahi hai, ki mujhe badla lena hai, ya mujhe kuch vengeance hai kisi ke saath. Aisa kuchh bhi nahi hai. (Social media has given it so much hype. Now there's this debate going on among people. I never had this attitude of wanting to take revenge or get back at anyone.)"

RJ Mahvash Pens Strong Note, Suggests How To Make Life 'Less Painful': 'Khudse Karle Mohabbat'



RJ Mahvash, who is rumoured to be dating Yuzvendra Chahal after his divorce from Dhanashree Verma, offered a bit of life advice for fans. Taking to her Instagram story, she replied to a fan who turned to her for life advice. Her post offered a practical approach to how to remain "unavailable" for "unavailable people". It's unclear whether her thoughts were shared in general or meant as a subtle dig at someone. "Someone in dms asked 'give me an advice for life'. I don't know life but here you go ; execute it for all your rishtedars, fake friends, crush etc," she wrote. She then ushered pearls of wisdom on how to make "life less painful". "Then simply make yourself UNAVAILABLE for people who are unavailable for you. Read that again," she posted. Mahvash then broke it down for her followers. "They don't pick your calls, don't



text them asking why. They don't reply on time, don't enter that inbox again. They don't see you when you need them the most because they are "busy", be busy for them now. Life is short to waste on emotionally unavailable people. Find friends who are as available as you are," she posted. Mahvash shared her Instagram story by adding the song "In Dino" by Pritam. On a concluding note and amid her dating rumours, she wrote, "Jab mile thodi fursat khudse karle mohabbat." Take a look at the post here: RJ Mahvash grabbed the headlines after she was spotted alongside Indian cricketer Yuzvendra Chahal at the Champions Trophy 2025 final in Dubai, where the two were seen cheering for Team India. Following Chahal's split from Dhanashree Verma, social media was quick to speculate about a possible romance brewing between him and Mahvash. However, in a candid chat on a recent Yuva podcast, Mahvash opened up about her take on relationships. She clarified that she's currently single and admitted that the modern outlook on marriage often leaves her confused. Mahvash also revealed she isn't into casual dating—she believes in meaningful connections, saying she'd only date someone she could see a future with. On the work front, RJ Mahvash is all set to make his acting debut with an Amazon Mini Series.